www.thearyasamaj.org

वेदों की
ओर
लौटो ।

युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

।।ओ३म्।।

।।कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।।

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १७ अंक २ १० फरवरी २०१७

गुजरात की धरती से, सूरज की किरण फूटी
अज्ञान अविद्या के दानव की कमर टूटी ।

www.thearyasamaj.org

सम्भाजीनगर का 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ'

वेदपारायण यज्ञ में आहुतियाँ प्रदान करते हुए यजमान दम्पती।

मुख्य समारोह में प्रस्तावना रखते हुए श्री दयारामजी बसैये बंधु तथा मंचपर विराजमान डॉ.सूर्यादेवी आचार्या एवं ब्रह्मचारिणियाँ।

आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए प्रख्यात विदुषी डॉ.सूर्यादेवी चतुर्वेदाचार्या।

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७ कलि संवत् ५११७ विक्रम संवत् २०७३
दयानन्दाब्द १९३ माघ १० फरवरी २०१७

प्रधान सम्पादक
माधव के.देशपांडे
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
डॉ.ब्रह्ममुनि
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
डॉ.नयनकुमार आचार्य
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - **प्रा.देवदत्त तुंगार, प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, प्रा.सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य**

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) मत-सम्प्रदाय व जातीवाद का दुश्चक्र(संपादकीय)....... ४
२) निमन्त्रण 'स्वास्थ्य रक्षा शिविर' का........................ ६
३) जीवनबोध का पर्व-'शिवरात्रि'.............................. ७
४) बोधोत्सव की सार्थकता १०
५) मृत्यूपाश अवश्यंभावी (काव्य)............................ १२
६) समाचार दर्पण १३
७) काव्य रुप में आर्य समाज के नियम १६
८) सभा के उपक्रम.. १८

मराठी विभाग

१) वेदसंदेश/दयानंद वाणी १९
२) महाशिवरात्री - एक आव्हान २०
३) म.दयानंद- एक आधुनिक वैज्ञानिक २६
४) वार्ताविशेष ३१
५) शोकवार्ता ३३

* प्रकाशक *
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

* मुद्रक *
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परळी-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा ।

संपादकीयम् मत-सम्प्रदाय व जातिवाद का दुश्चक्र...

मनुष्यकृत मत-सम्प्रदाय व जातिव्यवस्था ने मानवमात्र का जीना दुष्कर कर दिया है । आये दिन विश्वभर में साम्प्रदायिक शक्तियों और जातिगत भेदों की दीवारें अधिक मजबूत होती दिखाई दे रही हैं । सही दिशा में प्रयत्न न होने के कारण ही यह विषैली बेल सम्प्रति विश्ववृक्ष पर छा गयी है। लगता है कि इससे पिण्ड छुडाना अब जटिल सा हो गया है । वैज्ञानिक विकास चरमसीमा पर होने के बावजूद भी (उसी की सहाय्यता से) ये मत-सम्प्रदाय अधिक उग्र रुप धारण कर रहे हैं । बढता आतंकवाद इसी का ही तो परिणाम है । भारतवर्ष की स्वतंत्रता के पश्चात् हमारे संविधाननिर्माताओं की यह भूल रही है कि उन्होंने इन सम्प्रदायों को 'धर्म' के नाम से संबोधित किया और यह महान देश 'धर्मनिरपेक्ष' बन गया । भला जिस देश को धर्म की अपेक्षा ही न हो, तब क्या वहां सुख व शान्ति स्थापित हो सकती है ? कदापि नहीं! क्योंकि नीतिकारों ने कहा है-'सुखस्य मूलं धर्मः।'

वस्तुतः धर्म यह एक पवित्र एवं विशाल भावना से ओतप्रोत शब्द है । संसार के जितने भी धारण करने योग्य श्रेष्ठ तत्व हैं, वे सभी धर्म के अन्तर्गत आते हैं - 'धारणाद् धर्म इत्याहुः।' इसके विपरीत अधर्म है, जो कि त्याज्य है धर्म एक-दूसरों को जोडता है, तोडता कभी नहीं । मत व सम्प्रदाय जोडते नहीं, बल्कि तोडते हैं । धर्म तो एक ही है, 'मानवता' । जिसके मूल्य वेदों की ज्ञानसरिता में नित्य प्रवाहित हैं । इतने ऊँचे आशयवाला धर्म शब्द मत-पन्थ या सम्प्रदाय के लिए पर्यायवाची बन गया, यह खेद की बात है । महर्षि व्यास ने एक दूसरे के साथ आत्मानुकूल व्यवहार करने को धर्म की संज्ञा दी है-'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।'

हाल ही में दिल्ली के सर्वोच्च न्यायालय ने ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कहा है कि, कोई भी राजनैतिक दल या उसके नेता मत-सम्प्रदाय व जाति का नाम लेकर राजनीति कर नहीं सकते या चुनाव लड नहीं सकते । जनता में साम्प्रदायिकता व जातीयता की आड में वे वोट मांग नहीं सकतें। लोगों में साम्प्रदायिकता या जातिवाद की आग भडकाकर मानव को मानव से अलग करने का अपराध यदि इन साम्प्रदायिक दलों द्वारा होता हो, तो निश्चय ही वह कानूनी अपराध होगा । इस ऐतिहासिक निर्णय से कई साम्प्रदायिक दलों के कारनामों पर रोक लगी है । देश को चुनावी राजनीति की संकीर्ण गलियों से निकालकर एकता और मानवता के संवैधानिक राजमार्ग पर लानेवाला यह कदम है । पिछले २५ वर्षों तक मंदिर-मस्जिद या अन्य कारणों से हिन्दू, मुसलमान आदि पन्थों में चल रहे साम्प्रदायिक मुद्दों पर इससे पाबंदी लग सकती है । भारतीय राजनीति का गिरता स्तर देश को जिस दिशा में ले जा रहा है, इसका अंदाज लगाना कठिन सा हो गया है । जनता को कभी धन

www.thearyasamaj.org

का लालच दिखाकर ओट खरीदे जाते हैं, तो कभी नानाविध प्रलोभन देकर नागरिकों को अपने पक्ष में किया जाता है। सबसे विचित्र बात है यह कि मनुष्यकृत पन्थ-सम्प्रदाय व जाति को आधार बनाकर वोट बैंक की राजनीति करना यहां के राजनेताओं का स्वभाव ही बन गया है । छोटे से लेकर बडे चुनावों तक मजहब व जातिवाद की संकीर्णता रहती है । शिवसेना, एमआईएम, अकाली दल, समाजवादी पार्टी और यहाँ तक की काँग्रेस, भाजपा आदि भी सांम्प्रदायिक राजनीति करते हैं ।

दूसरी ओर आज देश के हर प्रान्तों में सम्प्रदाय व जाति के आधार पर ही आरक्षण की माँग हो रही है । बच्चों, विद्यार्थियों, महिलाओं को भारी संख्या में रास्तों पर उतारकर बड़े-बडे आन्दोलन किए जा रहे हैं। जो बात सबके पूर्ण हित व कल्याण की हो, सभी की सामयिक समस्याओं को दूर कराने की हो, तो उसी को लेकर यदि आन्दोलन होते तो उससे देश की एकता में बढोतरी होगी । अन्यथा समाज में सम्प्रदाय व जातिवाद का राक्षस बढता ही जायेगा । अतः केवल 'मानव' को आधार मानकर ही आन्दोलन होने चाहिए, न कि किसी सम्प्रदाय या जाति के आधार पर ! सम्प्रदाय व जाति का नाम लेकर आरक्षण की माँग हो या इसके आधार पर स्थापित होनेवाले राजनैतिक दल हो ! इन सब पर प्रतिबन्ध लगना चाहिए। इसके कारण देश में आपसी संघर्ष व तणावपूर्ण वातावरण बढता है। सर्वोच्च न्यायालय ने उपरोक्त महत्वपूर्ण फैसला सुनाकर ऐसी घटिया राजनीति करनेवालों की बोलती बंद कर दी है । इस महत्त्वपूर्ण फैसले से उनका चुनाव तक रद हो सकते हैं । जनप्रतिनिधित्व कानून की धारा १२३(३) तहत न्यायालय द्वारा हुए इस ऐतिहासिक निर्णय से साम्प्रदायिक दलों को सचेत होना पडेगा।

सवाल यह उठता है कि क्या कानून बनाने से पन्थ या जातिवाद का दुरुपयोग समाप्त होगा ? कदापि नहीं ! क्योंकि इस कानून से पहले भी राजनीति में इस तरह की संकीर्णता को कोई स्थान नहीं था । फिर भी जोर शोर के साथ मजहबी व जातिवादी ढंग से प्रचार किया जाता था । अब भले ही साम्प्रदायिक संकीर्णता के खिलाफ कानून बना हो, किन्तु राजनेताओं के हृदय से ये विषाक्त दलीलें कम होंगी, ऐसा नहीं लगता। क्योंकि पन्थ, सम्प्रदाय व जातिवाद को विचारों से ही दूर करना आवश्यक होता है । जब तक इस तरह के कुविचार और कुसंस्कार जनता में बनें रहेंगें, तब तक उनमें अज्ञान, अविद्या व धार्मिक (साम्प्रदायिक) दोष बढते ही जायेंगे । इसीलिए नेता से लेकर जनता तक सभी को अपने दिलों दिमाग से मत-सम्प्रदाय तथा जातिभेद के दूषित विचारों को हटाना होगा। न्यायालय को यह भी उचित था कि, वह धर्म व सम्प्रदाय को अलग मानकर उनकी स्वतन्त्र व्याख्या करता, क्योंकि साम्प्रदायिक राजनेता अपने ही मजहबों को उचित मानकर उन्हें 'जीवनपद्धति' मानते हैं, तब धर्म का उचित स्वरुप क्या होगा? इससे लोग अनभिज्ञ हैं, इसलिए यह कानून बनाने के साथ ही न्यायालय को धर्म व सम्प्रदाय इन शब्दों की समुचित व्याख्या करना आवश्यक था।

- नयनकुमार आचार्य

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा द्वारा
स्व.धर्मपालजी भसीन(लन्दन) एवं
स्वं.शान्तिदेवी मायर लन्दन की स्मृति में

संजीवनी आरोग्य मंदिर, स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रम, परली–वै. जि.बीड में

प्रान्तीय स्वास्थ्यरक्षा एवं चिकित्सा शिबिर

प्रिय स्वास्थ्यप्रेमी सज्जनों, बहनों .... सस्नेह नमस्ते !

प्रतिवर्ष के अनुसार इस वर्ष भी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा परली–वै. में **''स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर''** का आयोजन हो रहा है । इस शिबिर में विभिन्न शारीरिक, मानसिक विकारों पर आयुर्वेद, निसर्गोपचार एवम् योग के माध्यम से चिकित्सा होगी । आयुर्वेद में प्रतिपादित शोधन, शमन और पूरन का अवलंब करने से निश्चित ही जीर्ण रोग भी ठीक होंगे । **यह शिबिर अन्तर्राष्ट्रीय समाजसेविका स्व.श्रीमती शान्तिदेवी मायर एवं आर्यविभूति स्व.श्री.धर्मपालजी भसीन(दोनो लंदन) की पावनस्मृतियों में आयोजित किया गया है।**

अत: स्वास्थ्य को उत्तम बनाने के इच्छुक सज्जन, माता–बहनें व युवक–युवती अधिक संख्या में शिविर में सम्मिलित हो ।

* शिविर के मार्गदर्शक *

प्रसिद्ध योग एवं आयुर्वेद विशेषज्ञ ■वैद्य पू.विज्ञानमुनिजी, ■डॉ.ब्रह्ममुनिजी वानप्रस्थी, ■पं.सुधाकरजी शास्त्री,■डॉ.उदयसिंह चौहान(एम.बी.बी.एस.),■पं.सुधाकरजी शास्त्री, ■वैद्य कराड–परळी, ■पं.लक्ष्मणराव आर्य,■माता श्रीमती सेवायति, ■भजनोपदेशक–पं.प्रतापसिंहजी चौहान■सहयोगी– श्रीकांत कुलकर्णी, शिवदास नागरगोजे,राकेश आर्य।

दिनचर्या

सुबह ४.३० – जागरण	दोपहर १ से २ – स्वास्थ पर व्याख्यान
सुबह ५ से ६.३० – आसन प्राणायाम	दोपहर २ से ३– फलाहार
सुबह ७ से १० – उपचार	दोपहर ५ से ६ – उपचार
सुबह १० से ११.३० – स्नान आदि	शाम ६.३० बजे – भोजन, भ्रमण
सुबह ११.३० से १२ – भोजन	शाम ७ – सन्ध्या, भजन व प्रवचन
दोपहर १२ से १ – विश्राम	रात ८ बजे – सायंकालीन मन्त्र पाठ, शयन

प्रवेश शुल्क : रु.२५००/-

* स्थान : स्वामी श्रद्धानन्द गुरुकुल आश्रम, परली-वै. जि.बीड

* विनीत : महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य समाज परली-वै.

www.thearyasamaj.org

जीवनबोध का पर्व 'शिवरात्रि'

– डॉ.महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि भारत का धार्मिक, सांस्कृतिक और महान प्रेरक पर्व है। इसका संबंध मंगलकारी शिव भगवान की पूजा, उपासना, व्रत एवं संकल्प भावना से है । सभी धार्मिक, आस्था वाले इस पर्व को किसी न किसी रुप में बडी श्रद्धाभक्ति से मनाते हैं। आज जो शिवरात्रि का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक तथा लोक में प्रचलित स्वरुप मिलता है, वह मात्र बाह्याडम्बर और रस्म-रिवाज तक सीमित हो रहा है । सत्य है कि शिवरात्रि आत्मबोध, सत्यबोध तथा जीवनबोध का पर्व है । पर्व जगाने, संभलने व दिशाबोध कराने आते हैं । आज पर्वो की मूल चेतना, उद्देश्य, सन्देश तथा सत्यस्वरुप विकृत हो रहा है। पर्वों से हम जीवन लक्ष्य का सन्देश देने प्रतिवर्ष आता है । कल्याणकारी शिव का जो बोध कराए, उससे मिलने की भावना जागृत करे, वही सच्ची शिवरात्रि है । बाकी तो संसारी और भोगरात्रियाँ हैं, रात्रियाँ हमें सुलाने आती हैं । शिवरात्रि जगाने और जीवन का बोध कराने आती हैं । यह आत्मबोध का सार्थक पर्व है ।

संसार की साधारण घटनाएँ महापुरुषों के जीवन में परिवर्तन, मोड और क्रांति ला देती हैं । मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि सत्यबोध और वैचारिक क्रांति लेकर आई । वे शिवरात्रि की रात जागने के बाद जीवनभर नहीं सोए । यदि मूलशंकर के जीवन में सच्ची शिवरात्रि न आती, तो वे 'दयानन्द' न बनते । ऋषि दयानन्द न होते, तो आर्यसमाज न होता । यदि आर्यसमाज न होता तो विस्मृत वैदिक धर्म, वेद, यज्ञ, समाजसुधार आदि का सत्यस्वरुप कौन दिखाता ? ऋषि ने अपना सम्पूर्ण जीवन वेदोद्धार, देश, धर्म, मानवता तथा संसार के उपकार के लिए आहूत कर दिया । ऐसा अनोखा निराला, विलक्षण, सत्य का शोधक, सत्य वक्ता, सत्य का प्रचार और सत्य पर शहीद होनेवाला महापुरुष दुनिया में दूसरा कोई नहीं हुआ है । ऋषि की विशेषताओं और उपकारों का जितना गुणगान किया जाय, उतना थोडा है । सत्य है कि ऋषि के ज्ञान बोध का पर्व शिवरात्रि, हम सब ऋषि भक्तों, आर्यसमाजियों, सभा संगठन, संस्थाओं आदि के अधिकारियों के लिए आत्मचिंतन, आत्मविश्लेषण, कर्तव्यबोध, सत्यधर्म आदि के चिंतन-मनन का अवसर है । क्या खोया ? क्या पाया ? ऋषि की विचारधारा के प्रचार और प्रसार के लिए हम क्या कर रहे हैं ? ऐसे अवसर सोचने, अपने को बदलने,

व्रत तथा संकल्प के लिए आते हैं ।

संसार की सबसे बडी मूल्यवान तथा महत्वपूर्ण जीच 'जीवन' है । हम अपने आत्मकल्याण, आत्म उत्थान और जीवन निर्माण के लिए धार्मिक स्थानों, सद्ग्रंथों एवं महापुरुषों के साथ जुडते हैं । यदि हमारे जीवन में सत्यबोध नहीं हुआ, हमने अपने जीवन की बुराइयों, दुर्गुणों, दोषों आदि को दूर नहीं किया, पशुता से देवत्व की प्रवृत्ति नहीं बनाई । जीवन को धार्मिकता, आध्यात्मिकता तथा प्रभु के साथ नहीं जोडा, तो सत्य है कि हमने शिवरात्रि बहिर्जगत् में मनाई है । अन्तर्जगत् में अन्धेरा-अज्ञान, स्वार्थ, अहंकार, पशुता आदि भरी रही, तो समझना चाहिए हम अपने को धोखे और अन्धेरे में रख रहे हैं । इतिहास साक्षी है - जो अन्दर से जागे हैं, उनके जीवन बदल गए हैं । जीवन का कायाकल्प हो गया । पतित जीवन से पवित्र जीवन बन गए । भोगी-विलासी दुर्व्यसनी मुंशीराम तपस्वी, त्यागी, बलिदानी, स्वामी श्रद्धानन्द बन गए । भोग विलास तथा वासनाओं के कीचड में फंसे अमीचन्द अमूल्य हीरा बन गए । गुरुदत्त नास्तिक से आस्तिक बन गए । यह तब संभव हुआ, जब उनके हृदय में ज्ञान की अग्नि प्रज्ज्वलित हुई । हमारी ज्ञान, विवेक तथा सत्य की अग्नि प्रज्ज्वलित नहीं है । इसलिए आज हमारे विचारों तथा जीवन में परिवर्तन, सुधार व आकर्षण उत्पन्न नहीं हो पा रहा हैं । मूल में भूल हो रही है। हमारे जीवन नहीं बन पा रहे हैं । जीवन से ही दूसरे के जीवन में ज्योति जलती है । वेद का अमर सन्देश है- **'यो जागार तं ऋचः कामयन्ते।'** जो जागता है, उसे ही सत्यज्ञान तथा आत्मज्ञान प्राप्त होता है ।

शिवरात्रि आत्मज्ञान का पर्व है । सत्य को जानने और खोजने का पर्व है । शिवरात्रि सच्चे शिव के साथ जुडने का सन्देशा देती है । जड पूजा से चेतन पूजा की ओर चलो ! बाहर की दुनिया से अन्दर की दुनिया में आओ ! जागो ! अपने जीवन तथा जगत् को संभालो! जीवन बडी तेजी से व्यर्थ की बातों, विवादों, उलझनों और भोगों में गुजरा जा रहा है । मानव जीवन को प्राप्त करने के बाद भी जीवन को उद्देश्यहीन बनाकर जिया, तो उपनिषद् के शब्दों में **'महती विनष्टिः'** इससे बढकर जीवन की हानि व विनाश और कुछ नहीं है । आज हम इतने भौतिकवादी, भोगवादी तथा अज्ञानी हो रहे हैं कि पर्व, वेदकथाएँ, उपदेश, प्रवचन, सम्मेलन आदि आते हैं, इनमें बाह्य धूमधाम, दिखावट-बनावट, प्रदर्शन आदि खूब होता है । आत्मचेतना, आत्मसुधार तथा जनकल्याण का भाव जागृत नहीं दिखाई देता है । भोजन वही सार्थक होता है, जो शरीर को लग जाय । उपदेश वही माना जाता है, जो जीवन, विचार तथा आचरण को बदल दें । शिवरात्रि पूछ रही है-

www.thearyasamaj.org

'मूलशंकर को तो बोध हो गया। तुम्हें बोध कब होगा? हम कब अपना बोध दिवस बनायेंगे ? जिस दिन हम अपना बोध दिवस मनायेंगे, उसी दिन हमारी सच्ची शिवरात्रि होगी !'

यह बोधोत्सव का पर्व हमें जगाने, संभलने, कर्तव्यबोध तथा कुछ करने के लिए प्रेरित कर रहा हैं -आर्यों! ऋषिभक्तों ! उठो ! जागो ! अपने को संभालो ! संगठित हो जाओ ! मिलकर बैठो, सोचो और मिलकर चलो! अपने कर्तव्य और दायित्व को समझो! अपनी विरासत और वसीयत संभालो! ऋषि के जीवन से प्रेरणा लो! ऐसा प्रेरक, आदर्श, सर्वस्व त्यागी और आजीवन विषपायी महापुरुष संसार के इतिहास में न मिलेगा । संसार हमारी ओर देख रहा है । हम व्यर्थ के विवादों में उलझ रहे हैं । विवादों को छोडो, संवादो को पकडो । ऋषि ने जिस उद्देश्य प्रयोजन और कार्यों के लिए 'आर्य समाज' बनाया था, उस पर गंभीरता से चिन्तन-मनन और कार्य करने की प्रेरणा शिवरात्रि दे रही है । क्या हम शिवरात्रि का सन्देश सुनकर अपने जीवन व कर्तव्य का बोध करेंगें ? क्या शिवरात्रि पर आत्मचिन्तन करके ऋषि मिशन के लिए ईमानदारी व सेवाभाव से सहयोगी बनने का व्रत व संकल्प लेंगें ? तभी सच्चे अर्थ में शिवरात्रि मनाने की उपयोगिता, सार्थकता और व्यावहारिकता है । यही शिवरात्रि का सन्देश है।

(साभार- आर्य संकेत मासिक, उज्जैन के 'ऋषिबोध विशेषांक २००६' से)

(लेखक रामलाल आनन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के निवृत्त अधिव्याख्याता हैं)

-शालीमार बाग, नई दिल्ली

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक, विश्ववन्द्य महर्षि दयानंद सरस्वती के

जन्मदिवस(२१ फरवरी २०१७) एवं

ऋषि बोध दिवस (२४ फरवरी २०१७)

के उपलक्ष्य में

ऋषिवर देव दयानन्द को शतशः अभिवादन !

तथा आर्यजनों को जागृति हेतु

हार्दिक शुभकामनाएं !

बोधोत्सव की सार्थकता

– श्रीमती रमा रत्नप्रकाश आर्य(तिवारी).

हमारा भारत देश त्यौहारों, उत्सवों व पर्वों का देश है। सभी धार्मिक आस्थावाले इन उत्सवों, पर्वों को बडी श्रद्धा व भक्ति से मनाते हैं । हर उत्सव के पीछे अपनी अलग कहानी छिपी हुई है । लेकिन सोचने की बात यह है कि क्या हम उस कहानी के मर्म को जानते हैं ? और यदि जानते हैं, तो क्या उस पर आचरण करते हैं ? आनेवाले २४ फरवरी को '**शिवरात्रि**' जिसे हम 'ऋषि बोधोत्सव' भी कहते हैं, हर आर्य सामाजिक और गैर आर्य सामाजिक संस्थाओं में धूमधाम से मनाया जायेगा और पत्र-पत्रिकाओं में समारोह की तथाकथित भव्यता की खबरें भी पढने को मिलेंगी । लेकिन क्या कभी हमने इस बात का आत्मचिंतन किया है कि इस बोधोत्सव की कहानी के मूल में जिस व्यक्ति को बोध हुआ, उस व्यक्ति ने इस बोध के सत्य तक पहुंचने के लिये कितने जंगलों की खाक छानी, कितने कष्ट उठाये, कितना तप व त्याग किया और उसका वह प्रयत्न व पुरुषार्थ उस सत्य को जानने के बाद ही समाप्त हुआ । इतना ही नहीं इस सत्य को जानने के बाद वह इसे अपने तक ही सीमित नहीं रख सका । सभी स्वार्थों से ऊपर उठकर इस सत्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए उसे कितनी बार जहर पीना पडा व कितने कष्ट व अपमान उठाने पडे, यह जग जाहिर है । इसीलिये शायद इस पर्व को '**ऋषि बोधोत्सव**' का नाम दिया गया ।

शिव का अर्थ ही है कल्याणकारी । हम सबके लिये भी हर रात शिवरात्रि हो सकती है, यदि हम अपने-अपने हठ, दुराग्रह, इर्ष्या, द्वेष को छोडकर पूरी ईमानदारी के साथ सत्य की खोज में लग जाये । सत्य के आग्रही बनें । सभी पर्व हमें उद्देश्यबोध, कर्तव्यबोध, दिशाबोध कराने तथा जगाने के लिये ही हैं । यदि हम संभल जाते हैं, उसके मर्म को पहचान लेते हैं, तो हमें सही दिशा मिल जाती है । लेकिन देखा यह जा रहा है कि आजकल पर्व मात्र बाह्य आडंबर, पूजापाठ, उपवास(व्रत नहीं) आदि तक ही सीमित रह गये हैं । हम इन पर्वों की मूल भावना, प्रेरणा, संदेश व उद्देश्यों को भूलते जा रहे हैं । अभी तक कितनी ही शिवरात्रियाँ आई और चली गई । उन्हें समारोह पूर्वक मनाने में भी हमने कोई कमी नहीं की । लेकिन किसको कितना आत्मबोध हुआ? यह कोई नहीं बता सकता । अर्थात् बोध नहीं हुआ । हुआ होता तो आज सामाजिक विषमताएं कुछ हद तक तो मिट जाती, मतभेद व मनभेद नहीं बनते।

आज हम बाहर से सभी जागृत दिखाई देते हैं, लेकिन हमारी आत्मा अंदर से जागृत नहीं है। भौतिकवादी चकाचौंध व भोगवादी प्रवृति के कारण हमारी आत्मा मैली हो चुकी है और हम धार्मिकता, आध्यात्मिकता व सत्यवादिता से बहुत दूर जा चुके हैं। इतना कीमती मानव जीवन व मानव शरीर पाकर भी हम सत्य का बोध नहीं कर सके। हम यह नहीं जान सके कि अपने को जानकर ही हम जन्म-मृत्यु व सांसारिक दु:खों से छूट सकेंगें। हम न जाने कब से बोधोत्सव मना रहे हैं? लेकिन इस आत्मचिंतन के अभाव से ही हमारे अंदर आत्मकल्याण, आत्मसुधार, दुर्गुणों को छोडने का भाव जागृत नहीं होता।

जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं ने सत्यान्वेषियों के जीवन बदल दिये। बुद्ध, दयानंद, न्यूटन, एडीसन ऐसे ही सत्यान्वेषी थे। छोटी-छोटी घटनाओं ने इन्हें महान बनाया, उन घटनाओं से हम सभी रुबरु होते हैं, लेकिन हम सभी महान नहीं बन सके। क्यों नहीं ? अत: बोधोत्सव पर जरुरत है, आत्मचिंतन, आत्मबोध की ! और एक ऐसे क्षण की, जो हमारे जीवन में भी नई क्रान्ति, नया मोड या परिवर्तन ला सके.। एक व्यक्ति के जीवन का ऐसा परिवर्तन, न जानें कितने लोगों के जीवन को बदल सकता है, इसका देव दयानंद से बढिया उदाहरण और कहां मिलेगा ?

यदि बालक मूलशंकर ने अपने जीवन की उस छोटी घटना की गहराई को समझकर उस सत्य तक पहुंचने की कोशिश न की होती, तो वे **'स्वामी दयानंद'** नहीं बनते।

आइये! हम सभी इस बोधोत्सव के महत्त्व को संमझे। सिर्फ उपवास करने व समारोह मनाने में ही अपनी इतिश्री न समझें। महर्षि के दर्द को महसूस करें। ऋषि ने **'सत्यार्थ प्रकाश'** के १० वे समुल्लास में **'आपस की फूट, मतभेद....'** आदि लिखकर कुल आठ रोगों को भारत के पतन का जिम्मेदार ठहराया हैं। इसमें से यदि हम आपसी एकता को समझ लें, तो आपस की फूट समाप्त हो जाये। मतभेद मनभेद न बनें। सभी विद्वान् है और सभी सिद्धांतों को जानने व समझने का दावा करते हैं, तो फिर आपस में यह झगडे क्यों ? क्यों नहीं हम सत्य को ग्रहण करते व असत्य को त्यागने को उद्दत सहीं रहते हैं। सामाजिक उन्नति व संगठन की उन्नति के लिये क्यों नहीं हम अपनी उन्नति को त्याग देते? हम महर्षि को अपना आदर्श मानने का दावा करते है लेकिन सिर्फ अपने भाषणों में। उन आदर्शों को अपने आचरण में क्यों नहीं लाते ? स्वामी दयानंद ने संसार के कल्याण के लिये समाधि सुख का भी त्याग कर दिया। हममें तो उनके त्याग, तप, तपस्या का सुई की नोंक के बराबर भी गुण नहीं, तो फिर हमारे अंदर इतना

गर्व किस बात का ? आज आत्मचिंतन की जरुरत हैं। इससे शायद आत्मबोध हो जाये।

आइये, इस पर्व पर हम इन्हीं सब बातों का चिंतन करें। हम सोंचे कि हम क्या है ? क्या कर रहे है ? क्या इससे सब का भला हो रहा है ? हमारे जीवन में, व्यवहार व आचरण में जो असत्य व अधर्म व अनैतिक चिंतन है, उसे दूर करने की कोशिश करें। शायद इसका बोध आत्मचिंतन के द्वारा आनेवाली शिवरात्री को हमें हो सके। वह रात्रि हमारे लिये 'शिव' हो सके, इसी आशा के साथ हम बोधोत्सव को सार्थक करें।

– 'श्रद्धा' निवास, कटघरपुरा,
किल्ले धारुर जि.बीड

मृत्युपाश अवश्यंभावी !

मृत्युपाश से बचा न कोई
छोटा हो या बडा।
नित्य निरंतर पासा डाले
महाकाल है खडा ।।१।।

न तो राजा राम रहे,
न सिकन्दर का ताज।
काल पाश में चले गये सब
बडे-बडे महाराज ।।२।।

न तो कोई दौलतराम रहा
ना ठाट-बाट मकान रहा।
घमंडी देह मिला मिट्टी में
धरा पर धरा सामान रहा ।।३।।

मृत्यू है बस प्रभु के वश में
बंदे ! उससे नाता जोड।
पाप-पुण्य का विचार कर
अपने गन्दे धन्दे छोड ।।४।।

– कवि पं.प्रशान्तकुमार शास्त्री (परली)

आर्य समाज परली-वै. एवं दोडिया परिवार के सौजन्य से

दयानन्द जन्मोत्सव व ऋषि बोधोत्सव के उपलक्ष्य में

भव्य रुप में 'वेदज्ञान कथा यज्ञ'

दि.२२ से २६ फरवरी २०१७ – सस्नेह निमन्त्रण

✻ **मा.आचार्य श्री आनन्दजी पुरुषार्थी**(वैदिक प्रवक्ता, होशंगाबाद-म.प्र.)

✻ **मा.पं.श्री अजय आर्य** (आर्य भजनोपदेशक, मेरठ-उ.प्र.)

अतः इस समारोह में सभी आर्यजन भारी संख्या में अवश्य पधारें।

समाचार दर्पण 'वेदो में शाश्वत जीवनमूल्य' -श्रद्धानन्दजी

'संसार में वैदिक धर्म ही सर्वाधिक प्राचीन धर्म है । अत: इसी आधार पर विश्व में शान्ति प्रस्थापित हो सकती है, क्योंकि वेदों में सार्वभौम शाश्वत जीवनमूल्य विद्यमान हैं, जिनके पालन से मानवमात्र की सभी समस्याओं का समाधान हो जाता है', यह उद्गार हैं तपस्वी सन्यासी एवं महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती के । नाण्देड में हाल ही में आयोजित 'सर्वधर्म (पन्थ) परिषद' में वे मौलिक विचार रख रहे थे ।

ओखी मठ (उत्तराखंड) के पौराणिक जगद्गुरु भीमाशंकरलिंग शिवाचार्य महास्वामीजी की षष्ट्यब्दी के उपलक्ष्य में इस धर्मपरिषद का आयोजन हुआ था। इस परिषद में वैदिक धर्म व सिद्धान्तों की भूमिका विशद करने हेतु पू.स्वामीजी व सभा के उपमन्त्री प्रा.देवदत्त तुंगारजी को आमन्त्रित किया गया था। इस अवसरपर इन दोनों ने वेदप्रतिपादित विशुद्ध विचारों को प्रबलता के साथ प्रस्तुत किया। स्वामीजी ने कहा- 'वेद ईश्वर की अमरवाणी है। इसी ज्ञान के आधार पर विश्व में सुखसमृद्धि का प्रसार हो सकता है । धर्म तो एक ही है,उसका नाम है- 'वैदिक धर्म!' अन्य सभी मानवद्वारा निर्मित मत व सम्प्रदाय हैं, इन्हें हम धर्म कह नहीं सकते ।' प्रा.तुंगारजी ने बताया कि वैदिक वाङ्मय में विज्ञाननिष्ठ व समाज का सर्वहित करनेवाले मूलभूत तत्व विद्यमान हैं ।

इस समारोह में स्वामीजी व तुंगारजी को सम्मानित किया गया ।

डॉ.संजय तुंगार का अन्तर्राष्ट्रिय सम्मान

नान्देड आर्य समाज के सदस्य तथा पुणे पुलिस कमिशनर विभाग के वरिष्ठ पुलिस अधिकारी डॉ.श्री संजय देवदत्त तुंगार को हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया । श्री तुंगार को संयुक्त राष्ट्रसंघ (यूनो) ने दक्षिण अफ्रीका के सुदान गणराज्य में **'शान्तिसैनिक'** के रुप में भारत देश से एक वर्ष के लिए आमन्त्रित किया था ।

श्री तुंगारजी ने प्रामाणिकता के साथ वहां पर बहुत ही उत्कृष्ट कार्य किया और एक कर्तव्यतत्पर वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के रुप में अन्तर्राष्ट्रिय स्तर पर अपनी सर्वोत्तम कार्यपद्धति से सभी को प्रभावित किया है। सुदान देश में शान्ति, सुरक्षा व सौहार्दपूर्ण वातावरण की स्थापना में डॉ.तुंगार द्वारा दिये गये अप्रतिम योगदान के फलस्वरुप वहाँ के गृहमन्त्रालय द्वारा उन्हें **'गौरवपदक'** (Middle) प्रदान कर

सम्मानित किया गया। एक विशेष समारोह में सुदान के कमिशनर श्री ब्रुस ने उन्हें यह पदक प्रदान कर उनका अभिनन्दन किया। हरे, सफेद व काले रंग से सुशोभित यह सम्मानचिह्न सही अर्थों में हरियाली, शान्ति एवं समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। अन्तर्राष्ट्रिय पुरस्कार की उपलब्धि पर आर्यपुत्र डॉ.संजयजी तुंगार व समस्त तुंगार परिवार का आर्य समाज, महाराष्ट्र सभा एवं आर्य परिवारों की ओर से हार्दिक अभिनन्दन! श्री तुंगार इसी फरवरी माह में सुदान देश से भारत(पुणे) लौटे हैं।

संभाजीनगर में 'ऋग्वेद पारायण यज्ञ' सम्पन्न

आर्य समाज संभाजीनगर (औरंगाबाद) के तत्त्वावधान में दि.१७ से २३ नवम्बर २०१६ के दौरान **'ऋग्वेद पारायण यज्ञ'** बडी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य जगत् की प्रसिद्ध विदुषी डॉ.सूर्यादेवीजी चतुर्वेदा के ब्रह्मत्व में सुसम्पन्न इस यज्ञ में आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की कु.प्रियंका दण्डीमे(पुणे), प्रियंका सोमानी(पाली-राज.), रचना चौधरी(दिल्ली), प्रणिता यादव(अजमेर), कविता सिंह (दिल्ली) इन ब्रह्मचारिणियों वैदिक मन्त्रों का सस्वर पाठ किया।

यज्ञ में आर्यसमाज के पदाधिकारियों, सदस्यों व कार्यकर्ताओं के साथ ही पौराणिक जगत् के श्रीराम धानोरकर, पं.अशोक देव, पं.दुर्गादास मुळे, परमिंदरदास आदि यजमान सम्मिलित हुए। यज्ञ के पश्चात् डॉ.सूर्यादेवीजी के प्रभावशाली प्रवचन होते रहे। उन्होंने यज्ञ की महिमा, वेदज्ञान की प्रासंगिकता, मानव जीवन का उद्देश्य, ईश्वरीय व्यवस्था, ईश्वर का यथार्थ स्वरुप, उसकी भक्ति-उपासना, महर्षि दयानन्द का अद्भुत कार्य, आर्य समाज की विचारधारा, नारी-उद्धार में महर्षि की भूमिका, सामाजिक-राष्ट्रीय व वैश्विक चुनौतियां, यज्ञ का शुद्ध स्वरुप-महत्ता व आवश्यकता आदि विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला। विश्व हिन्दू परिषद के दिवंगत अध्यक्ष स्व.अशोकजी सिंघल के प्रथम स्मृति दिवस के उपलक्ष्य में इस यज्ञ का आयोजन हुआ था।

समारोह की सफलता के लिए आर्य समाज के पदाधिकारी सर्वश्री जुगलकिशोर दायमा(प्रधान), दयाराम बसैये(मन्त्री), एड.जोगेन्द्रसिंह चौहान(कोषाध्यक्ष), सौ.सवितादेवी एवं श्री बलवंतराव जोशी, मनोज चौण्डिये, अभिविलास डोंगरे, भूषणभाई पटेल, बसैये परिवार के सदस्य सर्वश्री जगन्नाथजी, ओमप्रकाशजी, सुरेशचन्द्र, प्रविण आदियों प्रयत्न किये। समारोह की सफलता में कैलाशनगर के नगरसेवक श्री भालेकर दम्पती का विशेष सहयोग रहा।

गुरुकुलाश्रम परली में निवास हेतु

स्वामी श्रद्धानन्दजी को शिष्यगण आग्रह करें ।

आप सभी को ज्ञात ही है कि असंख्य छात्रों के निर्माता पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी ९९ वर्ष में पदार्पण कर चुके हैं। उनके तपस्यामय जीवन व वृद्धावस्था को देखते हुए अब उन्हें अधिक घूमना-फिरना योग्य नहीं होगा। उनके लिए यही समुचित होगा कि वे एक स्थान पर ठहरकर आर्यजनों तथा शिष्यों को उपदेश देते रहें । दुर्भाग्य से अहर्निश उनकी सेवा में रहकर देखभाल करनेवाले उनके भतीजे श्री रणवीरजी का भी अकस्मात ही देहावसान हुआ। इन सभी बातों पर विचार करते हुए हमने स्वामीजी को परली स्थित 'गुरुकुल आश्रम' में आकर निवास करने की विनती की है। यहाँ पर उनके लिए अनुकूल वातावरण है। अत:आप सभी स्वामीजी के शिष्यगण, अनुयायी व आर्य कार्यकर्त्ता उन्हें गुरुकुल आश्रम,परली में निवास करने हेतु अवश्य आग्रह करें ।

लातूर का वार्षिकोत्सव १४, १५ व १६ मार्च को

पं.मोहितजी शास्त्री व पं.राजवीरजी शास्त्री आमन्त्रित

मराठवाडा की प्रसिद्ध पुरानी आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर का ८३ वां वार्षिकोत्सव आगामी दि.१४, १५ व १६ मार्च २०१७ को विभिन्न कार्यक्रमों के साथ उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा है ।

इस समारोह में मार्गदर्शन हेतु आर्यजगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक व विद्वान् श्री पं.मोहितजी शास्त्री(बिजनौर-उ.प्र.) तथा मराठी भाषिक विद्वान् श्री पं.राजवीरजी शास्त्री(सोलापूर) को आमन्त्रित किया गया है। प्रतिदिन प्रात: ७.३० से १०.३० तक वेद पारायण यज्ञ, अध्यात्मिक विषयों पर भजन व प्रवचन तथा रात्रि में ८ से १० तक विभिन्न सैद्धांतिक व राष्ट्रीय विषयों पर इन विद्वानों के भजन व व्याख्यान होंगें। बाहर से पधारनेवाले श्रोताओं की भोजन व निवास की व्यवस्था की गयी है ।

अत: अधिकाधिक संख्या में आर्यजनों को पधारने का अनुरोध प्रधान अॅड.श्री हरिश्चंद्र पाटील, मन्त्री चंद्रभान परांडेकर, उपप्रधान ओमप्रकाश पाराशर, उपमंत्री अॅड.धीरेन्द्र पाटील, कोषाध्यक्ष अविनाश परांडेकर, बाबुराव तेरकर, धर्मवीर परांडेकर आदियों ने किया है । इस आर्य समाज के वार्षिकोत्सव को ऐतिहासिक परंपरा रही है, जिसमें आज तक आर्य जगत् के उच्च कोटि के विद्वान पधार चुके है। यह आर्य समाज हैदराबाद आन्दोलन से जुडी है।

*** काव्यसुधा ***

काव्यरुप में आर्य समाज के नियम

कवि – सुरेश गीर 'सागर'

वैदिक हो तेरे विचार मानव, वैदिक हो तेरा आचरण रे ।
गाए जा तू भजन वैदिक, किए जा तू वैदिक जागरण रे ।।धृ।।

सब सत्य विद्याओं का मूल, है परमेश्वर स्मरण रहे ।
विद्याओं से ही जाना जाता, सारा चराचर स्मरण रहे ।
स्मरण रहे ईश्वर ने ही, बनाई है धरती और गगन रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।१।।

सब सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद ही धर्मग्रंथ है ।
वेद का पढना-पढाना और सुनना-सुनाना ही धर्मपन्थ है ।
ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद अपार ज्ञान धन रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।२।।

वेद की बोले ऋचाएं सत्य को सदा सर्वदा धारण करें ।
असत्य को छोडने का अभ्यास प्रयास मानव आमरण करें ।
वैदिक राह पर चलकर करना अपना उन्नत जीवन रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।३।।

धृतिः क्षमा दमः अस्तेय शौचम् हैं धर्म के गुणधर्म ।
इंद्रियनिग्रह धी विद्या अक्रोध सत्यम् धर्म के गुणधर्म ।
धर्मानुसार वर्तने मानव इन इस गुणों को कर धारण रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।४।।

शारीरिक आत्मिक सामाजिक उन्नति का वेदों में उपदेश ।
संसार का उपकार करना आर्य समाजिकयों को है परम आदेश ।
कृण्वतों विश्वमार्यमं की उद्देश्य पूर्ति में रहना मानव मगन रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।५।।

www.thearyasamaj.org

ढाई अक्षर प्रेम पढनेवाला पण्डित कहलाया जाता है ।
प्रेम ही है धर्म औरधर्म प्रेम ही से निभाया जाता है ।
सबसे प्रितिपूर्वक यथायोग्य धर्मानुसार रहे वर्तन रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।६।।

विद्या या ज्ञान का अभाव अज्ञान या अविद्या कहलाए ।
सर्वहितकारी सुविद्या प्राप्त करने हेतु गुरु शरण में जाए ।
अविद्या का नाश और सुविद्या की वृद्धि करते आर्य जन रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।७।।

केवल अपनी ही उन्नति में संतुष्टि कहलाती है प्रकृति ।
सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझना है संस्कृति ।
हों सब जन उन्नत तो होगा हर समस्या का समाधान रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।८।।

व्यक्तिगत हित हेतु निश्चय ही हर कोई स्वतंत्र रहे ।
सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालन में परतंत्र रहे ।
आर्य समाज के दस नियमों का पालन कर सागर आर्य बन रे ।
वैदिक हो तेरे ...।।९।।

–'इन्दिरा–श्याम', केशवनगर, अंबाजोगाई रोड, लातूर मो.९४२२६५५५५४

सेवकशिष्य की नियुक्ति हेतु निवेदन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के संरक्षक पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी) ने अपना समग्र जीवन विद्यार्थियों के नवनिर्माण तथा उन्हें वैदिक पन्थानुगामी बनाने में लगाया है । स्वामीजी की वृद्धावस्था को देखते हुए अब उनके साथ रहकर सेवा करनेवाले किसी सुयोग्य शिष्य, युवक या प्रौढ व्यक्ति की आवश्यकता है ।

जो महानुभाव ऐसे तपस्वी व्यक्तित्व के सान्निध्य में रहकर माता-पिता व आचार्य के रुप में सेवा करना चाहते हैं, कृपया वे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्पर्क करें। उन्हें उचित वेतन भी दिया जाएगा। सेवानिवृत्त, अध्यापक या कर्मचारी हो तो उन्हें अग्रक्रम दिया जायेगा।

– मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन–जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

* मानवकल्याणकारी उपक्रम *

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव–'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान – विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ–जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ–कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

www.thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।। (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद संदेश

आत्मज्ञानी सापडणे कठीण

श्रवणायापि बहुभिर्यो न लभ्यः श्रृण्वन्तोऽपि बहवो यन्न विद्युः।
आश्चर्योऽस्य वक्ता कुशलोऽस्य लब्धाऽऽश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः।।

(कठोपनिषद–२/७)

आत्मज्ञान हे असंख्य लोकांना ऐकुन देखील मिळत नाही. अनेक जण या ज्ञानाला ऐकत असतांना सुद्धा समजू शकत नाहीत. या आत्मज्ञानाचा उपदेष्टा (वक्ता)असंख्य लोकांमध्ये कोणीतरी एखादाच अद्‌भुत असतो. तसेच या आत्मज्ञानाला.प्राप्त करणारा एखादा विवेकी विरळच असतो. विवेकी.व ब्रह्मज्ञानी आचार्यांकडून उपदेश ग्रहण केलेला ज्ञानी एखादाच सापडतो.

दयानंद वाणी

ब्राह्मण व विद्वानांमुळे देशाचा ऱ्हास !

वेदांमध्ये व शास्त्रांमध्ये असे स्पष्ट सांगितले आहे की, 'जे ज्ञानी, धार्मिक व पवित्र असतील, त्यांनाच '**ब्राह्मण**' म्हणावे आणि त्यांचा आदर करावा.' परंतू येथे तर मुर्ख विषयासक्त, कपटी, लंपट व अधार्मिक लोक स्वतःला ब्राह्मण म्हणून घेऊ लागले आणि आपणच पूज्य आहोत' असे सांगू लागले. परंतू सात्विक वृत्तीच्या, विद्वान व सत्यप्रिय ब्राह्मणांची लक्षणे या लोकांमध्ये थोडीच आढळणार? परंतू जेंव्हा क्षत्रियादी यजमान संस्कृत विद्येला पारखे झाले, तेंव्हा या ब्राह्मणांनी ज्या कांही थापा मारल्या, त्या साऱ्या त्या बिचाऱ्यांनी खऱ्या मानल्या. त्यामुळे या नामधारी ब्राह्मणांचे चांगलेच फावले. त्यांनी आपल्या वाक्‌जालात सर्वांना अडकवून आपल्या आधीन करुन घेतले आणि ते लोकांना सांगू लागले की, '**ब्रह्मवाक्यं जनार्दनः**' म्हणजे ब्राह्मणांच्या मुखातून जे काही वचन निघते, ते जणू साक्षात परमेश्वराच्या मुखातून निघाले आहे, असे समजावे.

(सत्यार्थप्रकाश–११ वा समुल्लास)

www.thearyasamaj.org

'महाशिवरात्री'- एक आव्हान - पं.रमेश ठाकुर

स्वामी दयानंद सरस्वती हे एका युगपुरुषाचे नाव आहे. एकोणिसाव्या शतकातील ती एक महान व्यक्ती नव्हे, शक्ती होती. ते एक महान धर्मसुधारक व समाजसुधारक होते. अंधारात सापडलेल्या व दिशा हरवून बसलेल्या समाजाला व देशाला आधार असतो, तो केवळ समोरच्या क्षितिजावर चमकणाऱ्या ध्रुव ताऱ्याचा! स्वामी दयानंद सरस्वतींनी स्वातंत्र्य, स्वत्व आणि स्वाभिमान हरवून बसलेल्या भारतीयांना आत्मभान दिले. काळरात्रीत सापडलेल्या लोकांसमोर त्यांनी उष:काल उभा केला. मत-मतांच्या दलदलीत खोलवर अडकलेल्या व मती, नीती, स्वत्व व सत्व गमावून बसलेल्या भारतीयांना त्यांच्या गौरवपूर्ण इतिहासाची स्वामी दयानंद सरस्वतींनी आठवण करुन दिली.

स्वामी दयानंदांचा जन्म गुजरातेतील टंकारा या गावी सन १८२४ मध्ये झाला. त्यांचे मूळचे नाव मूलशंकर! त्यांचे माता-पिता औदिच्य ब्राह्मण होते. समाजात त्यांना सन्मानाचे स्थान होते. घरची परिस्थिती चांगली; घराण्यात ज्ञानाची परंपरा होती. मूलशंकर हा कुशाग्र बुद्धीचा संवेदनशील मुलगा होता. मूलशंकरचे माता-पिता शिस्तीचे भोक्ते होते. आपल्या मुलावर त्यांनी धर्मसंस्कार अतिशय कर्तव्यभावनेने केले होते. शिक्षण पारंपारिक पद्धतीने दिले होते. वयाच्या अवघ्या चौदाव्या वर्षी यजुर्वेद पूर्ण कंठस्थ करुन घेतले होते. मूलशंकराची स्मरणशक्तीही कमालीची होती.

स्वामी दयानंदांचे वडील करसनजी हे छोटेसे जमीनदार होते. ते कट्टर शिवभक्त होते. ते स्वभावाने अत्यंत निश्चयी, निग्रही व सत्यप्रिय हो. दयानंदांची माता परंपरागत भारतीय मातेप्रमाणे अत्यंत नम्र, मायाळू व परोपकारी होती. तिचे नाव अमृतबेन होते. तिला सर्वजन **'अमूबा'** असे म्हणत. त्यांचे चुलते मावजी हे मोठे उत्साही व उद्योगी होते. या तिघांचेही दयानंदांवर खूप प्रेम होते. दयानंदजी हे पाच भावंडामध्ये सर्वात मोठे होते. त्यांच्याहून लहान असे दोन भाऊ व दोन बहिणी त्यांना होत्या. परंतू मोठा मुलगा म्हणून घरचा कर्ता पुरुष या नात्याने सर्वांच्या आशा दयानंदावर केंद्रित झाल्या होत्या. वयाच्या पाचव्या वर्षापासूनच संस्कृत शिकवण्यास प्रारंभ केला होता. याबाबत स्वामीजी एके ठिकाणी स्वत:च सांगतात- **"माझ्या वडिलांनी मला लहानपणी रुद्राध्याय वगैरे शिकवून यजुर्वेद शिकवण्यास आरंभ केला. दहाव्या वर्षापासून मी पार्थिव पूजा करीत होतो. वडिलांनी मला शिवरात्रीचे व्रत करायला**

सांगितले. पण मी ते केले नाही. तेंव्हा त्यांनी मला शिवरात्रीची कंथा सांगितली. ती मला खूंप आवडली.''

आपल्या मुलाने संप्रदायनिष्ठ, धर्मभीरु, कर्मकाण्डप्रवण असा एक आदर्श ब्राह्मण बनावे, असा करसनजींचा पद्धतशीर प्रयत्न होता. किशोरावस्थेतील दयानंदांचे विचार वेगळ्याच दिशेने जाणार होते. याची त्यांना काहीच कल्पना नव्हती. कदाचित् खुद्द दयानंदांनांही याची स्पष्ट कल्पना नसावी. परंतु अशी एक घटना घडली की, जिने त्यांच्या जीवनाची संपूर्ण दिशाच बदलून टाकली. तसे पाहिले तर ती काही अद्‌भुत किंवा अभूतपूर्ण घटना नव्हती. तुमच्या-आमच्या जीवनात ती नेहमीच घडत असते. पण तिचा आपल्यावर काहीच परिणाम घडत नाही. सामान्य व असामान्य माणसांत हाच तर फरक असतो. जी गोष्ट आपल्या नित्य परिचयाची असते तीच त्यांच्या जीवनात आमुलाग्र परिवर्तन म्हणजेच क्रांती घडवून आणते. अशी ती घटना घडली होती शिवरात्रीच्या दिवशी! त्या रात्रीने दयानंदांच्या जीवनात आणि त्यांच्याद्वारे साऱ्या मानवजातीच्या इतिहासात पहाट फुलविली. त्या घटनेचे वर्णन खुद्द महर्षींच्या शब्दांतच देणे उचित होईल. ते पुण्यामध्ये आपल्या प्रवचनात म्हणतात -

''माझ्या गावी गावाबाहेर एक मोठे देऊळ आहे. तेथे शिवरात्रीच्या दिवशी रात्री पुष्कळ लोक जमतात, पूजाअर्चा करतात. माझे वडीलें मी आणि इतर बरेच लोक तेथे जमलो होतो. पहिल्या प्रहराची पूजा आटोपली. दुसरीही पूजा झाली. मग रात्रीचे बारा वाजून गेल्यावर लोक हळूहळू जागच्या जागी डुलक्या घेऊ लागले. माझ्या वडिलांनाही डुलकी आली. पुजारी बाहेर गेला. माझा उपास निष्फळ होईल, या भीतीने मी निजलो नाही. इतक्यात एक चमत्कार झाला. देवळातल्या बिळातून उंदीर बाहेर आले आणि शंकराच्या पिंडीभोवती फिरु लागले. ते पिंडीवरील अक्षता खाऊ लागले. मी जागा होतो म्हणून तो चमत्कार मला दिसला. आदल्या दिवशी मी शिवरात्रीची कथा ऐकली होती. तिच्यात शिवाचे आक्राळ-विक्राळ गण, त्यांचे पाशुपतास्त्र, त्यांचे वृषभ वाहन व त्याचे अद्‌भूत शौर्य यांविषयी पुष्कळ श्रवण केले होते. म्हणून जेंव्हा मी उंदराची ती लीला पाहिली, तेंव्हा पोरबुद्धीस असे वाटले की, जो शिव आपल्या पाशुपतास्त्राने मोठमोठ्या प्रचंड दैत्यांना मारतो. त्याला एवढे क्षुद्र उंदीर हाकलून देता येत नाही काय? असे अनेक विचार माझ्या मनात आले आणि मी माझ्या वडिलांना जागे करुन विचारले की, 'एवढा प्रतापी शंकर या क्षुद्र उंदरांना का हाकलून लावीत नाही ?' यावर माझे वडील म्हणाले, 'तुझी बुद्धी फार वाईट

आहे. ही फक्त देवाची मूर्ती आहे' तेंव्हा मी मनाशी निश्चय केला की, 'जेंव्हा तो त्रिशूलधारी शंकर मी प्रत्यक्ष पाहीन, तेंव्हाच मी त्याची पूजा करीन. नाही तर करणार नाही.''

मूलशंकर अतिशय अस्वस्थ झाला. कांही दिवसांनी त्याचे चुलते वारले. सख्खी बहीण वारली. तो शोकसागरात बुडाला. त्याच्या मनात विरक्ती निर्माण झाली. त्याचे हे लक्षण पाहुन आई-वडिलांनी त्याचे लग्न करायचे ठरविले. त्याला संसारात गुंतविणे आवश्यक होते. पण मूलशंकर संसाराच्या जाळ्यात अडकू इच्छित नव्हता. बहिणीच्या मृत्यूने तो अतिशय अस्वस्थ झाला. मृत्यूविषयी त्याच्या मनात प्रचंड कुतूहल निर्माण झाले. "मलाही एके दिवशी असेच जावे लागेल" असा विचार त्याच्या मनात पुनः पुन्हा येऊ लागला. नचिकेताप्रमाणे त्याला मृत्यूही जाणून घेणे आवश्यक वाटले.

मूलशंकरची अस्वस्थता व बेचैनी साऱ्यांनाच लक्षात येत होती. एके दिवशी संधी साधून केवळ अंगावरच्या कपड्यानिशी गृहत्याग केला. नंतर तो कधीच परतला नाही. सत्यज्ञानाच्या शोधात अनवाणी पायांनी अनेक वर्षे भटकत राहिला. अनेक साधु-पुरुषांच्या त्याने भेटी घेतल्या. मनातल्या शंका विचारल्या, पण समाधान झाले नाही.

सत्यज्ञानासाठी मूलशंकरने घर सोडले. सर्वस्वाचा त्याग केला. गौतमबुद्धानेही अशाच प्रकारे व अशाच कारणासाठी सर्व प्रकारच्या सुखांना लाथाडून आपला राजवाडा सोडला होता. घर सोडले तेंव्हा मूलशंकरचे वय एकवीस-बावीस वर्षांचें होते. मूलशंकरने खूप भटकंती केली. सत्यज्ञानाच्या प्राप्तीसाठी त्याने चारी दिशा धुंडाळल्या. गुरुचा शोध घेतला. हिमालयात भटकंती केली. मुक्तीचा मार्ग योगी दाखवू शकतील म्हणून मूलशंकरने अनेकांच्या भेटी घेतल्या. पूर्णानंद सरस्वती या महाराष्ट्रीय संन्याशाकडून संन्यास दीक्षाही घेतली. दयानंद सरस्वती हे नाव धारण केले. खूप भटकंती केली. पण समाधान झाले नाही, मथुरेला स्वामी विरजानंदांची भेट घेतली व योग्य गुरु भेटला.

स्वामी विरजानंद, प्रज्ञाचक्षू, प्रकांड पंडित होते. ते साक्षात ऋषी होते. ते अंध होते, पण अज्ञानाच्या अंधारात बुडालेल्या जगाला ज्ञानाचा प्रकाश देण्याचे त्यांच्यात सामर्थ्य होते. वेद व इतर आर्ष ग्रंथांचा त्यांनी सखोल अभ्यास केला होता. व्याकरणावर त्यांचा अधिकार होता. आधुनिक काळातील ते पाणिनीच होते. स्वामी दयानंदांची ज्ञानलालसाही तेवढीच प्रचंड होती. स्वामी विरजानंदांनी स्वामी दयानंद सरस्वतींना अनार्ष ग्रंथ यमुनेत

बुड़वायला सांगितले. स्वामी दयानंदांनी सखोल अभ्यास सुरु केला. तेंव्हा ते छत्तीस वर्षाचे होते. संस्कृत भाषेवर त्यांनी अप्रतिम प्रभुत्व मिळविले. संस्कृत भाषेच्या व्याकरणाचा त्यांनी चिकित्सक पद्धतीने सखोल अभ्यास केला. वैदिक आर्ष साहित्यात ते पारंगत झाले. अडीच वर्षानंतर स्वामी दयानंद सरस्वतींनी आपल्या गुरुचा निरोप घेतला. स्वामी विराजानंदांची सेवा त्यांनी श्रद्धेने केली. त्यांचा राग सहन केला; आपल्या गुरुंविषयी कृतज्ञता निर्माण झाली.

विद्या संपादनानंतर स्वामी विरजानंदांचा निरोप घेणे भाग होते. स्वामी दयानंदांनी गुरुवर विरजानंदांना अपार श्रद्धा व कृतज्ञतेने गुरुदक्षिणा म्हणून लवंगा दिल्या. गुरुंनी त्यांना आदेश दिला, "लोकांना सत्यज्ञानाचा प्रकाश दे व देशाच्या स्वातंत्र्यासाठी प्रयत्न कर." हा गुरुचा आदेश पालन करण्याचा त्यांनी संकल्प केला. स्वामी दयानंद सरस्वतीचे हे जीवनदान होते. ती त्यांनी गुरुंना दिलेली गुरुदक्षिणा होती. ब्रह्मर्षी विरजानंदांनी स्वामी दयानंदांच्या जीवनाला नवी दिशा दिली; वैदिक ज्ञानभांडाराची चावी दिली. मूर्तिपूजेला वेदांमध्ये आधार नाही. श्राद्ध वेदांविरुद्ध आहे.

ज्ञान आणि दृढनिश्चय या दोनच गोष्टींचा त्यांना आधार होता. त्यांच्या बळावर स्वामी दयानंदांनी धर्मसुधारणा व समाजसुधारणेला हात घातला. स्वामीजींचा आवाज सर्वप्रथम दुमदुमला तो हरिद्वार येथे गंगेच्या काठावर! १८६७ सालची घटना आहे. कुंभमेळा चालू होता. स्वामीजींनी या कुंभमेळ्यात गंगेच्या काठावर **'पाखंड खंडिनी पताका'** रोवली. थंडीचे दिवस. अंगावर कपडे नकोत. संन्यासीच ते. गंगेच्यां काठी उभा राहिला हा निश्चयांचा महामेरु!

स्वामी दयानंदांनी मूर्तिपूजेचे खंडन केले. देव्हाऱ्यातील देव गंगेत बुडवायला त्यांनी सांगितले. ऐकणाऱ्यांच्या मनात खळबळ माजली. स्वामीजींनी पाखंड खंडिनी पताका फडकावली. त्यांनी मुख्यत: दोन प्रश्नांना हात घातला. १) मूर्तिपूजा २) जातिप्रथा. त्यांची त्यांनी तर्ककठोर चिकित्सा केली. निखळ सत्य हे वेदातच आहे. वेद हेच खरे आर्ष ग्रंथ. त्या ग्रंथांमध्ये ना मूर्तिपूजेचे समर्थन आहे, ना.... जन्माधिष्ठित जातिप्रथेचे! सत्यज्ञानाची गंगोत्री वेदातच आहे. सत्य बोलणे व सांगणे हाच असत्यावरचा प्रहार असतो. सत्य व असत्य एकत्र नांदूच शकत नाहीत. सत्याचा प्रकाश लोकांच्या दारापर्यंत नेणे हे स्वामी दयानंदांच्या आयुष्याचे मिशन बनले. त्यांनी आपले सर्व आयुष्य सत्याला अर्पण केले. सत्य शोधण्यासाठी त्यांनी आपली प्रज्ञा पणाला लावली. बहुदेवतावाद बोकाळला होता. अनेक देव-देवतांची मंदिरे देशात

बांधली गेली. तीर्थक्षेत्रांची संख्याही प्रचंड प्रमाणात वाढली होती. तेहतीस कोटी देवदेवतांचा हा देश ! अनिष्ट प्रथा-परंपरांचे जाळे देशभर पसरले होते. प्रत्येक पावलावर कर्मकांड ! त्यात सारा भारतीय समाज अडकला होता.त्याची विचारशक्तीच क्षीण झाली होती. बहुजनांना वं महिलांना शिक्षणाची दारे बंद होती. जातिप्रथेने समाजाला विषारी सापाप्रमाणे विळखा घातला होता. हजारो जाती-पोटजातीमध्ये देश विभागला गेला होता. जातिव्यवस्था जन्माधिष्ठित झाली होती. अस्पृश्यतेला अमानुषी स्वरुप प्राप्त झाले होते. बालविवाह सर्रास होत होते. विधवा-विवाहास बंदी होती. सतीप्रथा बंद पडली नव्हती. पूर्वजन्मीच्या पापाचे हे फळ असा समज दृढ झाला होता. भारतीय समाजाची ही अवस्था जीर्ण वस्त्रासारखी झाली होती.

स्वामी दयांनदांसमोर असा हा दुबळा भारत उभा होता. त्यांच्या अंगात प्राणच नव्हता. राजेरजवाडे इंग्रजांचे गुलाम होते. आपल्या प्रज्ञेविषयी त्यांच्या मनात कसलीच आस नव्हती. स्वदेश व स्वराज्य ! या संकल्पनांनी आकारच घेतला नव्हता. हे चित्र बदलायचे कसे ? आणि कोणी ? या प्रश्नांनी स्वामी दयानंदांना अस्वस्थ केले होते. संबंध देश विषवृक्षाखाली उभा होता. त्यांच्या फांद्यावर घाव घालायचे की मुळांवर? मुळांवर घाव घालणे आवश्यक होते. या वृक्षाच्या फांद्यामध्ये हवेतून विष आलेले होते. ही मूळे म्हणजे अनिष्ट प्रथा-परंपरा, अंधश्रद्धा, अज्ञान, जातिभेद, मूर्तिपूजा, बालविवाह, दैववाद, अवतारवाद वगैरे. झाडावरील फांद्या किंवा जमिनीखालच्या मुळया एकमेकींमध्ये अडकलेल्या होत्या. त्या नष्ट करण्याची आवश्यकता होती. हे आव्हान स्वामी दयानंदांनी आपल्या शिरावर घेतले, आत्मविश्वासाने!

महर्षी स्वामी दयानंदांनी गुण व कर्मावर आधारलेल्या वर्णव्यवस्थेचे समर्थन केले. जन्मावर आधारलेल्या वर्णव्यवस्थेचा त्यांनी विरोध केला. ती त्याज्य ठरविली. जन्माधिष्ठित वर्णव्यवस्थेला वेदांमध्ये कसलाच आधार नाही. स्वामी दयानंदांनी गुणकर्मावर आधारलेल्या वर्णव्यवस्थेचे समर्थन केले. व्यक्तीच्या योग्यतेनुसार तिला समाजात स्थान मिळते. वैदिक काळातील हे तत्त्व मोडीत काढून ती वर्णव्यवस्था जन्माधिष्ठित झाली होती. त्यामुळे जातीभेदाला प्रोत्साहन मिळाले. जन्माधिष्ठित वर्ण व जातिव्यवस्थेने अनेक अरिष्टे व अनार्थांना जन्म दिला. त्यामुळे समाज बंदिस्त बनला. रोटीबंदी, बेटीबंदी, विद्याबंदी, व्यवसायबंदी, प्रवासबंदी अशा बंदीमुळे समाजाला अंधाऱ्या कोठडीचे स्वरुप

प्राप्त झाले. त्यात ना हवा ना प्रकाश ! गुदमरणे मात्र अटळ होते.

महर्षी दयानंद हे चित्र बदलू इच्छित होते आणि म्हणून त्यांनी जातिव्यवस्थेविरुद्ध आवाज़ उठवला. स्वामीजींनी भारतीय समाजाच्या पुनर्रचनेचे कार्य अंगिकारले. हे अतिशय कठीण कार्य. पण हे शिवधनुष्य त्यांनी आत्मविश्वासानें उचलले.

स्वामी दयानंदांजवळ वाणी आणि लेखणी होती. त्यांनी वाणी परजली व लेखणीही. यांच्या पाठिशी कठोर असे तर्कशास्त्रही उभे होते. झंझावाताचे रुप धारण करुन त्यांनी देशात संचार सुरु केला. स्वामीजींनी भारतातल्या पुरोहितशाहीवर कठोर हल्ले चढविले. पुरोहितशाहीतच मूर्तिपूजेचे स्तोम माजविले. जातिप्रथेला खतपाणी घातले. उच्च-नीचता, अंधश्रद्धा, कर्मकांड, मंत्रतंत्र, फलज्योतिष आदी गोष्टींच्या माध्यमातून बहुजनांचे शोषण केले. मूर्तिपूजेचे खंडन पुरोहितांना कसे आवडेल ?

स्वामी दयानंदांचा हा झंझावात संबंध आर्यावर्तात संचरला. अनेक ठिकाणी त्यांचे शास्त्रार्थ हिंदू पंडितांबरोबर झाले, तसेच मुल्ला-मौलवी व ख्रिश्चन पाद्र्यांबरोबरही झाले. शास्त्रार्थाचे शास्त्रच स्वामीजींनी विकसित केले.

आपल्या विचारांच्या प्रचार-प्रसारासाठीच महर्षी दयानंद सरस्वतींनी १८७५ मध्ये आर्यसमाज या संघटनेची स्थापना केली. इथपर्यंतच्या सर्व प्रवासाचे मूळ कारण महाशिवरात्रीचा तो प्रसंग ! याच प्रसंगाने हा झंझावात घडवून आणण्याची प्रेरणा निर्माण केली. म्हणून **'महाशिवरात्री'** हा आर्य समाजाचाच नव्हे तर सर्व भारतीयांसाठीचा एक महत्वाचा सण आहे. हा सण **'ऋषी बोध दिन'** म्हणून साजरा करावयाचा आहे, तो इतर सणांप्रमाणे रुढी-परंपरा म्हणून नव्हे तर तो बोध घेण्यासाठी **'बोध-दिन'** म्हणून आहे...!

आजही ही आव्हाने तेवढ्याच उग्रतेने पुढे येत आहेत. जातिप्रथा, अंधश्रद्धा, मूर्तिपूजा, अवतारवाद या बाबी पुन्हा नव्या जोमाने पसरताना दिसत असल्याने आर्य समाजासाठी हे आव्हान आहे. ते पेलण्याची, त्या आव्हानांना सामोरे जाण्याची प्रेरणा घेण्यासाठी हा ऋषिबोधदिन साजरा करण्याची गरज आहे, म्हणून उठा ! पुन्हा नव्या जोमाने, ऋषिवर दयानंदांची धगधगती मशाल घेऊन..! ओम् शम् !

-२६, 'यज्ञ' निवास,
इंद्रप्रस्थ गृहनिर्माण सोसायटी,
गजानन मंदिर परिसर, गारखेडा,
औरंगाबाद मो.९४२३१७८८०३

www.thearyasamaj.org

दयानंद जयंती निमित्त विशेष-

महर्षी दयानन्द एक आधुनिक वैज्ञानिक

– माधव के.देशपांडे (मंत्री,महाराष्ट्र आ.प्र.सभा)

आज महर्षी दयानंदांविषयी, त्यांच्या चरित्राविषयी अथवा जीवना विषयी ऐतिहासिक घटना न सांगता त्यांच्या विचारसरणीतील 'आधुनिकता व वैज्ञानिकता' या विलक्षण अशा तार्किक बुद्धिमत्तेविषयी आपण विचार करु ! त्यांचे जीवनचरित्र तर तसे अनेकांना ठाऊक आहेच ! आता आपण विचार करु की दयानंदांच्या ठायी अशी कोणती विलक्षणता होती की, ज्यामुळे त्यांचे अनुयायी राजा-महाराजांपासून ते सामान्य लोकांपर्यंत सर्वजण होते. त्यात मुसलमान, ख्रिश्चन, बौद्ध, जैन, पौराणिक तर कांही संस्कृतज्ज्ञ ब्राह्मण सुद्धा होते. एवऐच नव्हे, तर त्या काळातील न्यायाधीश, जिल्हाधिकारी, पादरी सुद्धा होते. अशी कोणती विशेष बाब व विशेष आकर्षण त्यांचेजवळ होते ?

महर्षी दयानंदांची सर्वात महत्त्वपूर्ण विशेषता अशी आहे की, त्यांच्यामध्ये प्राचीनता असण्याबरोबरच आधुनिकताही होती. सर्वात प्राचीन अशा वेदावर त्यांचे संपूर्ण तत्वज्ञान आधारित आहे, असे असले तरी आधुनिक विज्ञान शिकण्यासाठी पाश्चात्य देशात जाण्याचीही ते आपल्या शिष्यांना प्रेरणा देतात. याचा प्रयोग करुन पाहू ! आम्ही दयानंदावर एवढे प्रेम का करतो? प्रत्येक मनुष्याची एक स्वाभाविक इच्छा असते की, मी नाविण्यपूर्ण दिसायला हवे. प्रत्येक वेळी कांही तरी वेगळेपणा दिसावा. वेगवेगळे नव-नवीन फॅशनचे कपडे घालावे असे का वाटते ? कारण आम्हांस आधुनिकता आवडते. आधुनिकतेचेच नाव नवीनता आहे. आम्ही आमच्या बाह्यरुपाविषयी व आधुनिकतेविषयी तर जागरुक असतोच! पण आंतरिक विचारसरणी विषयी किती प्रमाणात जागरुक असतो ? याउलट अत्यंत जुने, बिल्कुल पुराणमतवादी असतो. जसे एखादी उच्च शिक्षित व्यक्ती, रस्त्यातून एखादे मांजर जरी आडवे गेले तरी थबकते. मनात शंका येते. लग्न जुळविण्याच्या बाबतीत ग्रह, तारे, नक्षत्र, राशी, गुणमेलन करतांना दिसतात. यात आपणांस १० ते २० लाख रुपये वेतन असणाऱ्या उच्चशिक्षित अनुभवी व्यक्तीसुद्धा आढळून येतात. याचाच अर्थ असा की या सुशिक्षित लोकांच्या मनात हा प्रश्न कधीही उद्‌भवत नाही की, या जगात विज्ञानाचा नियम व कार्य-कारण सिद्धांत काम करतो, तर मग प्रत्येकाची मनोकामना पूर्ण होणे अनिवार्य आहे. हा वैज्ञानिक सिद्धांत

कोणाच्याही बुद्धीला चालना देत नाही, यांचेच आश्चर्य वाटते. नियम आणि अपवाद यामध्ये अपवाद नियमाला सिद्ध करतो अथवा नियमामुळे अपवाद सिद्ध होतो.

व्यक्ती श्रद्धेच्या अतिरेकामध्ये विज्ञान विसरते. प्रत्येक वेळी आपली बुद्धी व तर्काने विचारपूर्वक काम करण्याची युक्ती म.दयानंदांनी आम्हास दिली आहे. प्रत्येक संकटाच्या वेळी आम्ही ईश्वराची आठवण आल्यामुळे मंदिराकडे धाव घेतो. घरात चोर घुसला, तर मंदिरातील किंवा देव्हाऱ्यातील देवाला कसे कळणार ? आम्ही प्रार्थना करतो, 'हे भगवंता! माझ्या घरातील चोरास पळवून लाव. मला संकटातून वाचव. माझे रक्षण कर.' मंदिरातील देवालाच संरक्षणाची(मॅनेजर अथवा पुजाऱ्याची) गरज असते, त्यालाच आपण संरक्षणाची मागणी करतो. ज्याला इतरांच्या संरक्षणाची गरज असते, तो परमेश्वर असूच शकत नाही, हे सामान्यज्ञान आम्हांस नसते. 'जो महादेव (शिव) आपल्या अंगावर चढलेल्या उंदरास पळवून लावू शकत नाही, तो महादेव असू शकत नाही', हा विचार आम्हास ऋषी दयानंद देतात. लक्षात ठेवा त्यावेळी त्यांचे वय केवळ १४ वर्षे इतके अल्प होते.

महर्षी दयानंदांनी सर्वप्रथम हे सांगितले की, आम्ही स्वत:हूनच आपल्याच बुद्धीला कुलुप ठोकले आहे. जर एखाद्या मठ-मंदिरात, शिर्डीमध्ये अथवा अजमेरमध्ये जाऊन साऱ्या जगातील व्यक्तींचे नवस सफल होत असतील, तर 'या देशाचे भले व्हावे' अशी इच्छा बाळगणाऱ्या राष्ट्रप्रेमींचे सुद्धा मनोगत सफल व्हावयास हवे! मग त्या इच्छा का पूर्ण होत नाहीत? राष्ट्रप्रेमी म्हणतो की, 'मी माझ्या राष्ट्रातील जनतेला दहशतवादी व राष्ट्रीय शत्रूपासून वाचवू इच्छितो. सांगा माझी इच्छा पूर्ण होईल काय?' त्या ईश्वराला असे मागा की, जे या जगात इतर कोणतीही व्यक्ती ती मागणी पूर्ण करू शकत नाही. जर हा भगवंत माझी ही इच्छा पूर्ण करु शकत नसेल तर माझ्यासाठी हा ईश्वर तर बेकार आहे. हा विचार आम्हांस महर्षी दयानंद देतात.

तात्पर्य असे की, जर तुम्हास आधुनिक बनायचे असेल तर दयानंदांचा अनुयायी बनणे आवश्यक आहे. आम्हांस दयानंद आधुनिक होण्यासाठी सांगतात, तेवढे आधुनिक विचार इतरांनी कोणीही दिलेले दिसून येत नाहीत. दयानंदांच्या जीवन काळात त्यांना मानणारे कोण कोण लोक होते ? ज्या कोणांस आधुनिकता प्रिय होती, ज्यांच्या जिज्ञासांचे उत्तर दयानंदांजवळ होते, त्यांनी दयानंदांचे विचार किती ग्रहण केले ? आर्य समाज या संस्थेकडे बाह्य आकर्षण थोडेच आहे? आमचेकडे सर्वात महत्त्वाचे आकर्षण म्हणजे दयानंदांचे विचार! जे

www.thearyasamaj.org

की सरळ-सरळ आमच्या बुद्धीला चालना देतात, बुद्धी त्यांना स्वीकारते. ते सरळ हृदयास स्पर्श करतात. होय ! हे खरेच आहे. बुद्धीला पटते देखील! आमच्या बुद्धीला दयानंद चालना देतात. विचार करावयास प्रवृत्त करतात. महर्षी दयानंदांनी एक सर्वात स्वच्छ दृष्टिकोण असा आम्हास दिला की, केवळ मानण्याने प्रश्न सुटत नाहीत, जाणल्याने प्रश्न सुटतात. ज्याच्याविषयी आम्ही कांहीच जाणत नाही, त्याला मानण्यात काय अर्थ आहे ?

तुम्हास आश्चर्य वाटेल की, असे कोणते क्षेत्र आहे की, ज्याच्याविषयी ऋषी दयानंदांनी आम्हास आधुनिक विचार दिले नाहीत. दयानंदांच्या आणखी एका विषयावर आपण विचार करु ! दयानंद आम्हास वैदिक सिद्धांत समजावून सांगतात की, ज्याने अपराध केला आहे; त्यालाच दंड अथवा शिक्षा द्या. अपराध एकाने केला व दंड मात्र दुसऱ्यांना! हे होऊच शकत नाही. जी मुले अनाथ आहेत, ज्यांना समाज अवैध (अनौरस) म्हणून त्यांची अवहेलना करतो, त्यांचा काहीच दोष नाही. हा अवैध किंवा अनौरस शब्द चूक आहे. मुल अवैध, अनौरस नाही. मुलाचा जन्म ठीक-ठीक नियमानुसारच झाला आहे. अहो ! आई-वडिलांपासूनच संतती निर्माण होते. विना माता-पित्यांच्या तर त्यांचा जन्म झाला नाही ? त्याचे आई-वडील चांगलेच आहेत! तुम्ही त्यांना अवैध, अनौरस, अनाथ म्हणू शकत नाहीत. तुमच्या सामाजिक कायद्यानुसार अवैध असेल! मात्र निसर्गाच्या कायद्यानुसार नव्हे ! ऋषी दयानंद म्हणतात, 'काम-अपराध एकाने केला, तर दंड दुसऱ्याला आपण देऊ शकत नाही. ज्याने तुमच्या कायद्याचा भंग केला आहे, त्यालाच मिळाला पाहिजे. मुलाने तुमच्या कायद्याचा भंग केला नाही.' हा ऋषी दयानंदांचा बुलंद आवाज आहे. आता सांगा ही आधुनिकता आहे की पुरातनता ?

ऋषी दयांनदांविषयी आपण जेवढा विचार करु, तेवढे आपणांस कळून येईल की, या व्यक्तीने इतका विचार केलाच कसा ? आज आपणांजवळ **'सत्यार्थ प्रकाश'** उपलब्ध आहे. आपल्यासमोर वेदांचे प्रामाणिक भाष्य उपलब्ध आहेत. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, ऋषी दयानंद आहेत, आर्य समाज, उपदेशक, इतके शास्त्र व ज्ञान-विज्ञान उपलब्ध आहेत, वैदिक विद्वान आहेत, तरी सुद्धा ही पौराणिकता, अवैज्ञानिकता, अंधश्रद्धा, ढोंगी, बुवाबाजी, स्वार्थी गुरु, चेले, राष्ट्रद्रोही व भ्रष्टाचारी लोक यांची दुकाने पुन्हा जोरात चालत आहे. याला आम्ही स्वतःच जवाबदार आहोत.

दयानंदांसमोर तर यापैकी कांहीच नव्हते. वेद सुद्धा सुलभतेने उपलब्ध नव्हते.

त्यांच्यासमोर कांहीच नव्हते. मग त्यांनी अशीं अत्याधुनिक विचारसरणी कशी प्रस्थापित केली ? हा विचार त्यांना सुचला तरी कसा ? त्याचे समोर कोणीही दयानंदासमान व्यक्ती नव्हती. हा अद्‌भूत विचार त्यांच्याजवळ होता.

महर्षी दयानंदांकडे खालील तीन विलक्षण गोष्टी होत्या –

१) ते बाल ब्रह्मचारी होते. आणि म्हणूनच सांसारिक दुर्बलतेपासून ते अलिप्त होते. कोणत्याही राजाची अथवा शासकीय अधिकाऱ्यांची त्यांना पर्वा नव्हती. त्याच्यासाठी सत्याचा शोध हेच प्रमुख कार्य होते.

२) ते संस्कृतचे इतके प्रकाण्ड पंडित होते की, पूर्वीच्या वेदभाष्यकारांच्या चुका दर्शवून त्यांचा सामना ते करु शकत होते.

३) त्यांचा संस्कृत भाषेवर व स्वत:वर एवढा जबरदस्त विश्वास होता की, त्यांना कोणत्याही पादरी अथवा परकीय व्यक्तीच्या सहकार्याची अपेक्षा नव्हती. त्यांनी फक्त संस्कृतचेच शिक्षण प्राप्त केले होते. इंग्रजीचा त्यांचेवर बाह्य प्रभाव मुळीच नव्हता. कोणत्याही शब्दाचा अर्थ जाणण्यासाठी कोणत्याही शब्दकोषाची त्यांना गरज नव्हती. त्यांच्यासाठी यास्क मुनी व पाणिनी मुनींचे कोष तत्परतेने उपलब्ध(कंठस्थ) होते.

आपण जर दयानंदांवर प्रेम करणारे असू, तर खरेच विज्ञानप्रेमी आहोत! याद्वारे आपणांस असे खात्रीपूर्वक सांगता येइल की, आम्हांस बौद्धिकताप्रिय आहे, आम्ही ईश्वरावर प्रेम करताहोत, आम्ही वेदांवर प्रेम करताहोत,आम्ही मानवतेचे पुजारी आहोत, पण यांपैकी आपण एकावर जरी प्रेम करणारे असूत, तर आपण दयानंदांवर प्रेम करणार नाही, असे होणार नाही.

म्हणून जेंव्हा आम्ही दयानंदांविषयी बोलतो, तेंव्हा आम्ही मागासलेपणाविषयी बोलत नाही. दयानंद म्हणतात- 'आधुनिकता विचारात असली पाहिजे. तरच सर्वकाही आधुनिक होईल. जर विचारच पुरातन असतील, तर मग ही बाह्य आधुनिकता काय कामाची?'

आपण ऋषी दयानंदांच्या कोणत्या कार्याचा विचार करावा! प्राण्यावर होणाऱ्या अत्याचाराचा विषय असो, वाचतांना डोळ्यात पाणी आल्यावाचून राहत नाही. '**गोकरुणानिधी**' हे छोटेसे पुस्तक वाचा! असे वाटते की दयानंद साऱ्या पशूंचे वकीलच आहेत. इथे त्यांनी ईश्वरावर सुद्धा राग काढला आहे. ते म्हणतात कसे – '**काय तुझ्या न्यायाचे दरवाजे बंद झालेत काय ? काय या प्राण्यांची केविलवाणी हाक तुझ्या कानावर येत नाही ?**' इतकी सहानुभूती, इतकी

संवेदना, इतकी सहृदयता, इतकी करुणा दयानंदाशिवाय (स्वनामधन्य) कुठे मिळेल?

महर्षी दयानंदांचें कोणतेही कार्यक्षेत्र घ्या! विद्वत्ता पाहा, दया पाहा, उदारता पाहा! भारतवर्षात ऋषी दयानंदांनी कोणते कार्य केले असेल, तर आम्हांस आमचा आत्मसन्मान मिळवून दिला! जर काय कोणी आर्य समाजाशी जोडला गेला असेल, आत्मसन्मान विरहीत झाला असेल, तर तो दयानंदांचा अनुयायी होऊच शकत नाही! दयांनदांचा अनुयायी गरीब असू शकतो.तो मागे राहू शकतो, परंतु आत्महीन असूच शकत नाही.

आमचे शत्रुत्व फक्त वाईटपणाशी असू शकते.आमचे शत्रुत्व मनुष्याशी नाही, अज्ञानतेशी नाही, त्याच्या गरीबीशी नाही. गरीब आहे, परंतु गरीब असणे हा काही अपराध नव्हे! जोपर्यंत त्याचा बलवान साथी ईश्वर त्याचेजवळ आहे, तोपर्यंत तो दुर्बल असू शकत नाही. आमच्या जुन्या पिढीने ज्यामुळे आर्य समाजाला व दयानंदांला स्वीकारले होते, काय ती कारणे आज नाहिशी झाली आहेत ? जर आज ती कारणे दिसत नसतील तर आमचीच कांही तरी कमतरता असली पाहिजे. आम्ही विचारांपासून व सिद्धांतांपासून दूर जात आहोत. आम्हांस असे सांगण्यात येत आहे की, सिद्धांतांविषयी एवढा आग्रह धरु नका! नाही तर लोक दूर जातील. काय हेच सिद्धांत म.दयानंदांच्या वेळी आड येत होते ? नाही, पुन्हा हे सर्व जोमाने प्रकट होत आंहेत, कारण समाजात त्याला खत पाणी मिळत आहे. आज पुन्हा एकदा दयानंदांच्या कार्याची दृढतेने पूर्तता करण्याची गरज निर्माण झाली आहे. महर्षी दयानंद जयंतीनिमित्त आपणां सर्वांना त्यांचे विचार आत्मसात करण्याची शक्ती लाभो, ही कामना ! जयंती दिनानिमित्त या थोर विश्ववंद्य महापुरुषास श्रद्धापूर्वक अभिवादन ! धन्यवाद !

– रो हाऊस नं.३, साई अव्हेन्यू, कुणाल आयकॉन समोर,पिंपळे–सौदागर, पुणे–२७

मो.९८२२२९५५४५

आकाशवाणीवर प्रवचने

वैदिक गर्जना मासिकाचे संपादक डॉ.नयनकुमार आचार्य यांची परभणी आकाशवाणी केंद्रावरुन येत्या २१, २२, २३ व २४ फेब्रुवारी रोजी आध्यात्मिक विषयावर लघुप्रवचने प्रसारित होणार आहेत. दररोज सकाळी ५.५५ वा. ''विचारशलाका'' या चिंतनपर कार्यक्रमांतर्गत ते मौलिक विचार मांडणार आहेत. वैदिक सिद्धांताचा आधार घेत माणूस, विद्यार्थी, सद्व्यवहार, ज्ञानमहिमा या विषयाबरील माहिती सादर होणार आहे. वरील लघुप्रवचनांचे ध्वनिमुद्रण परभणीच्या आकाशवाणी केंद्रातील प्रसारण विभागात नुकतेच पार पडले. तरी श्रोत्यांनी या कार्यक्रमांचा लाभ घ्यावा.

www.thearyasamaj.org

(वार्ता विशेष)

परळी परिसरात विद्यार्थ्यांसाठी ज्ञानप्रबोधन

'राष्ट्राचे उज्ज्वल भवितव्य तरुण, विद्यार्थी व बालकांच्या हाती आहे. यासाठी शाळा-महाविद्यालयातून त्यांना सुस्कारांचे व्यासपीठ उघडून त्यांच्या अंगी मानवीय मूल्यांचे तत्त्वज्ञान रुजविण्यासाठी व्यापक प्रयत्न व्हावेत व विद्यार्थ्यांनीही वेदाधारित जीवनमूल्यांना धारण करावे,' असे आवाहन प्रांतीय सभेचे वेदप्रचार अधिष्ठाता श्री लक्ष्मणराव आर्य गुरुजी यांनी केले.

सभेच्या सहकार्याने आर्य समाज परळीच्या वतीने ग्रामीण भागातील विविध शाळांमध्ये विद्यार्थ्यांसाठी आयोजित जीवनसंस्कार वैदिक व्याख्यानमालेत श्री आर्य बोलत होते. त्यांचे सोबत सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंह आर्य व डॉ.नयनकुमार आचार्य हे ही या व्याख्यानमालेत मार्गदर्शक म्हणून सहभागी होते. या तिन्ही विद्वान उपदेशकांनी परळी तालुका व त्यालगतच्या सोनपेठ तालुक्यातील कांही शाळांमध्ये विद्यार्थ्यांशी संवाद साधला व जीवनोपयोगी मूल्यांवर प्रभावी शब्दात मार्गदर्शन केले. ज्या शाळांमध्ये कार्यक्रम संपन्न झाले, त्यात नंदागौळ येथील श्री भगवानबाबा विद्यालय, टोकवाडी येथील श्री रत्नेश्वर माध्यमिक व उच्च माध्यमिक विद्यालय, जिरेवाडी येथील सोमेश्वर विद्यालय, बँक कॉलनी परळीतील शारदा विद्यामंदिर, उखळी बु. येथील श्री केदारेश्वर विद्यालय, नंदनज येथील केदारी महाराज विद्यालय, नैकोटा येथील माध्यमिक विद्यालय व आवलगाव येथील कीर्तीश्वर विद्यालयांचा समावेश होता. हा प्रबोधनात्मक कार्यक्रम आयोजित केल्याबद्दल महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने वरील शाळांचे व विद्वानांचे आभार मानले आहेत.

सोलापुरात श्रद्धानंद बलिदान दिवस साजरा

सोलापुर येथील आर्य समाजात दि.२५ डिसेंबर २०१६ रोजी आर्य समाजाचे प्रख्यात तपस्वी क्रांतिकारी नेते व गुरुकुल शिक्षण पद्धतीचे अध्वर्यू अमर बलिदानी हु.स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती यांचा ९०वा बलिदान दिवस प्रबोधनपर कार्यक्रमानी साजरा करण्यात आला. प्रारंभी पं.वेदसुमन आर्य(भोसले) यांच्या ब्रह्मत्वाखाली **'महापुरुष प्रशंसन'** यज्ञ संपन्न झाला. त्यानंतर श्री रमेश बिडला यांनी सुमधुर भजन सादर केले. याप्रसंगी पं.राजवीरजी शास्त्री यांनी आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणातून स्वामी श्रद्धानंदांच्या क्रांतिकारी जीवन व कार्यावर प्रकाश टाकला. यावेळी

ते म्हणाले - '**मुन्शीराम ते महात्मा**' हा जीवनपट ऐतिहासिक स्वरुपाचा असून 'सत्संग, प्रयत्न आणि आत्मबळाच्या जोरावर माणूस जीवनात किती मोठे कार्य करु शकतो ? याचे ज्वलंत उदाहरण म्हणजे स्वामी श्रद्धानंद होय'. ते पुढे म्हणाले, 'स्वामीजींची महर्षी दयानंद, आर्य समाज, वैदिक सिद्धांतांवर त्यांची अगाध श्रद्धा होती. वैदिक धर्माच्या रक्षणासाठी त्यांनी सर्वस्व समर्पिले. सार्वदेशिक सभेची संगठन वृद्धी, गुरुकुल कांगडीची स्थापना, ब्रिटिशांशी दिलेला लढा, कॉंग्रेसचे कार्य, शुद्धी आंदोलन इत्यादी कार्यातील त्यांचे योगदान फारच प्रेरक आहे.'याप्रसंगी आर्य समाजाचे पदाधिकारी उपस्थित होते.

२२ ते २६ फेब्रु.दरम्यान परळीत 'वेदज्ञान कथा यज्ञ'

महान् क्रांतिकारी वेदोद्धारक युगपुरुष महर्षी स्वामी दयानंद सरस्वती यांचा जन्मदिवस व ऋषिबोधोत्सव परळी येथील आर्य समाजात विविध प्रबोधनपर कार्यक्रमांनी साजरा होत आहे. दोडिया परिवार व आर्य समाजाच्या वतीने दि.२२ ते २६ फेब्रुवारी २०१७ या दरम्यान होणाऱ्या '**वेदज्ञान कथा यज्ञा**'साठी आंतरराष्ट्रीय ख्यातीचे वैदिक प्रवक्ते व ओजस्वी विद्वान आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी (होशंगाबाद म.प्र.) आणि प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक पं.अजय आर्य (मेरठ-उ.प्र.) यांना आमंत्रित करण्यात आले आहे. या उद्बोधक व प्रेरणादायी कार्यक्रमाची तयारी मोठ्या प्रमाणात केली जात आहे.

दररोज सकाळी ७.३० ते ११ वा. पर्यंत चालणाऱ्या सकाळच्या सत्रात वेदपरायण यज्ञ, मौलिक भजनसंगीत आणि आध्यात्मिक व धार्मिक विषयांवर प्रवचनेतर दुपारी ४ ते ५ दरम्यान विद्यार्थी, युवक आणि महिलांसाठी शंकासमाधान आणि रात्री ८ ते ११ वाजेपर्यंत गीत-भजन व राष्ट्रीय, सामाजिक व जागतिक पातळीवर निर्माण होणाऱ्या विविध समस्यांवर प्रखर उपाययोजना आदी विषयांवर व्याख्यानाचे आयोजन होत आहे. 'मानवी जीवनात दुःख उत्पन्न होण्याची कारणे, शांती, सुख-समाधान व आनंद प्राप्तीचे वैदिक मार्ग, वैश्विक समस्यांवर वेदज्ञान-एकमेव उपाय' आदी विषयांवर या कार्यक्रमात मार्गदर्शन होणार आहे. तरी या कार्यक्रमास सर्व बंधु-भगिनींनी बहुसंख्येने उपस्थित राहावे, असे आवाहन संयोजकातर्फे करण्यात आले आहे.

www.thearyasamaj.org

ज्ञानकुमारजींचा प्रेरणादायी वाढदिवस

कोणत्याही प्रकारचा गाजावाजा न करता व कार्यक्रमांचे आयोजन न करता लातूरच्या रामनगर आर्य समाजाचे मंत्री श्री ज्ञानकुमारजी आर्य यांनी आपल्या ७५ व्या वाढदिवसाचे औचित्य साधून विविध सामाजिक व धार्मिक संस्थांना ७५ हजार रुपयांचे दान केले व नव्या पीढीसमोर दातृत्वाचा आदर्श निर्माण केला आहे.

श्री आर्य हे निवृत्त शिक्षक असून त्यांनी राज्य पाठ्यक्रमिक मंडळावर अभ्यासक म्हणून कार्य केले आहे. तसेच लेखक, वेदप्रचारक, प्रकाशक, साहित्य संशोधक, सामाजिक कार्यकर्ता व आर्य समाजाचे सक्रिय पदाधिकारी म्हणून बजावत असलेली त्यांची कामगिरी स्तुत्य अशी आहे. महर्षी दयानंदांचे निष्ठावंत अनुयायी व आर्य समाजाचे सिद्धांतानुगामी व्यक्तिमत्व त्यांची ओळख आहे. वैदिक विचारांच्या प्रचार व प्रसारांसाठी सतत धडपडत असलेल्या श्री आर्य यांनी ३१ डिसेंबर २०१६ रोजी आपल्या वयाची ७५ वर्षे पूर्ण केली, तर येत्या जून २०१७ मध्ये वैवाहिक जीवनाची ५० वर्षे पूर्ण करत आहेत. आपल्या अमृतमहोत्सवी वर्षानिमित्त तर विवाहाच्या सुवर्ण महोत्सवानिमित्त त्यांनी खालील संस्थांना ७५ हजार रुपयांचे दान करुन वाढदिवस साजरे करण्याची नवी परंपरा सुरु केली आहे. त्यांनी महाराष्ट्र सभा, आर्य समाज नेपाळ, गुरुकुल केहलारी व बिबराळ, बोटकूळ आणि संभाजीनगर या आर्य समाजांना दान दिले आहे. यानिमित्त श्री ज्ञानकुमारजी आर्य यांचे अभिनंदन!

शोकवार्ता

संजय आर्य काळाच्या पडद्याआड

वैदिक साहित्य मोठ्या प्रमाणात मराठी भाषेत आणणारे आर्य प्रकाशक व पिंपरी(पुणे) आर्य समाजाचे तरुण तडफदार सक्रिय कार्यकर्ते श्री संजय प्रभाकर आर्य यांचे शुक्रवार दि.३ फेब्रुवारी रोजी रात्री १० वा. च्या सुमारास हृदयविकाराच्या झटक्याने दुःखद निधन झाले. मृत्युसमयी ते ५७ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या पश्चात आई सौ.पुष्पादेवी, वडील श्री प्रभाकरराव, पत्नी सौ.अलका, दोन मुले चि.सागर व चि.आदित्य, दोन भाऊ श्री सुनिल व श्री मिलिंद असा परिवार आहे. आर्य समाजाच्या प्रचार–प्रसार कार्यात

www.thearyasamaj.org

व मराठी आर्य वाङ्मय प्रकाशन कार्यात मोठी मोलाची भूमिका बजावणाऱ्या या उत्साही युवा कार्यकर्त्याच्या अकाली निधनाने महाराष्ट्रातील आर्य समाज चळवळीला मोठा जबरदस्त हादरा बसला असून समाजातील धार्मिक व शैक्षणिक क्षेत्रासह आर्य समाज संस्थेची अपरिमित हानी झाली आहे. श्री आर्य सॉरगेट पुणे परिसरातील महात्मा फुले महाविद्यालयात अंशकालीन प्राध्यापक म्हणून कार्यरत होते. आर्य समाज पिंपरीचे अंतरंग सदस्य होते. या संस्थेतर्फे चालविण्यात येणाऱ्या साहित्य प्रकाशन विभागात त्यांचे सर्वाधिक योगदान होते. स्वत:च्या मालकीच्या 'आर्य प्रिन्टर्स'च्या माध्यमाने ते मराठी ग्रंथाचे प्रकाशन करीत असत. आर्यवीर दलाच्या शिबिर आयोजनात त्यांनी मोठी भूमिका बजावली. इंग्रजी विषयात एम.ए. केल्यानंतर त्यांनी वृत्तपत्र विद्या शाखेतून एम.ए. केले व पत्रकारिता आणि प्रकाशन क्षेत्राकडे वळले. दै.लोकमत व दै.तरुण भारत या वृत्तपत्राचे ते वरिष्ठ पत्रकार ही होते. 'हिंदू स्वाभिमान प्रतिष्ठाण' या धार्मिक संस्थेचे ही ते सक्रिय कार्यकर्ते होते.

मूळचे नगर जिल्ह्यातील श्री संजयजी यांचे कुटूंबिय गेल्या दोन पिढ्यांपासून पुण्यात स्थायिक आहेत. साधारणत: १९८३ साली पं.विश्वनाथ शास्त्री यांच्या प्रेरणेने श्री संजयजी हे आर्य विचारांकडे वळले. आज त्यांचा संपूर्ण परिवार आर्य तत्त्वांवर चालणारा आहे. स्व.प्रा.एकनाथ नाणेकर यांचे घनिष्ठ वर्गमित्र व जिवाभावाचे सोबती म्हणून श्री संजयजी ओळखले जात. दुर्दैवाने नाणेकरांच्या मृत्यूच्या ८ वर्षानंतर हृदयविकारानेच हाही मित्र जगातून निघून गेला. मितभाषी, सुस्वभावी, उद्यमी, मनमिळाऊ आणि कार्य करण्याची आंतरिक तळमळ असलेल्या श्री संजय आर्य यांच्या आकस्मिक निधनाने मराठभ आर्यविश्वात मोठी पोकळी निर्माण झाली आहे.

त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी ११ वा. सुमारास अत्यंत शोकाकूल वातावरणात पुण्याच्या रुपीनगर निगडी भागातील अमरजाई स्मशानभूमीत पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंतिम संस्कार करण्यात आले. आर्यपुरोहित सर्वश्री पं.विश्वनाथजी शास्त्री, हेमंत आर्य, विवेक आर्य यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला.

याप्रसंगी प्रांतीय सभेचे मंत्री माधवराव देशपांडे व पं.विश्वनाथ शास्त्री यांनी प्रातिनिधीक स्वरुपात सर्वांच्या वतीने श्रद्धांजली वाहिली. यावेळी आर्य समाज पिंपरीचे पदाधिकारी व कार्यकर्ते मोठ्या प्रमाणात उपस्थित होते.

दिवंगत आत्म्यास प्रांतीय सभा व आर्य समाजांतर्फे भावपूर्ण श्रद्धांजली !

www.thearyasamaj.org

-ο राज्यस्तरीय वक्तृत्व स्पर्धा का पुरस्कार वितरण ο-

हदगांव में आयोजित स्व.बिराजदार स्मृति विद्यालयीन वक्तृत्व स्पर्धा में प्रथम पुरस्कार प्राप्त कु.साक्षी पाईकराव को पुरस्कृत करते हुए सर्वश्री प्रभाकररावजी देशमुख, आर्यमुनिजी, स्वा.सै.हळदे, शिंदे, कदम आदि।

द्वितीय पुरस्कार प्राप्त कु.वैष्णवी वाघमारे को पुरस्कृत करते हुए आर्य समाज के पदाधिकारी गण ।

सोलापूर में आयोजित मल्लीनाथ बिराजदार गौरव वक्तृत्त्व स्पर्धा में विजेता छात्रों के साथ आर्य समाज के पदाधिकारी ।

www.thearyasamaj.org

परिवारों के प्रति सच्ची निष्ठा,
सेहत के पति जागरुकता
शुदधता एवं गुणवत्ता, करोडों
परिवारों का विश्वास, यह है
एम.डी.एच.का इतिहास जो
पिछले ९३ वर्षों से हर कसौटी
पर खरे उतरे हैं - जिनका कोई
विकल्प नहीं। जी हां यही हैं
आपकी सेहत के रखवाले

MDH
मसाले
असली मसाले
सच-सच

MAHASHIAN DI HATTI LTD.
Regd.Office : MDH House,
9/44 Kirti Nagar, New Delhi-110015,
Ph : 25939609,. 25937987
Fax : 011-25927710
E-mail : mdhltd@vsnl.net
Website : www.mdhspices.com

लाजवाब खाना !
एम.डी.एच. मसाले
हैं ना !

आर्य जगत के दानवीर भामाशाह
महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त
महाशय धर्मपालजी

REG.No.MAHBIL/2007/7493*Postal No.L/Beed/18/2015-17

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली-वैजनाथ
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' के संपर्क कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

श्रमशील किसान,
सरल, धार्मिक, श्रद्धालू,
सेवाभावी एवं
सुस्वभावी व्यक्तित्व तथा
अपने पुत्र व कन्याओं
को सुसंस्कारित
करनेवाले आदर्श पिता

स्व.श्री रंगनाथ सीतारामजी जाधव
भावपूर्ण श्रद्धांजली !

डी.टी.पी.
जॉबवर्क के लिए
उपयुक्त स्थान

उत्कृष्ट डिझाइनों में सब प्रकार की रंगीन छपाई के कार्य
अल्प दरो में समय पर किये जानेवाला मराठवाडा का प्रसिद्ध मुद्रण स्थान
भारत ऑफसेट प्रिंटर्स
स्टेशन रोड, परली-वैजनाथ जि.बीड- ४३१ ५१५
* मुख्य संचालक *
श्री हनुमान रंगनाथरावजी जाधव
Mob.9422592579 / E-mail : bharatoffsetparli12@gmail.com
इनकी ओर से वैदिक गर्जना मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेंट !